मानवता का संदेश

लेखक

मौलाना नफीस अहमद नदवी

अनुवादक

क़ाज़ी अलाऊद्दीन

(एम0 ए0, आई0 टी0 आई0)

प्रकाशक

इस्लामिक फ़िक़्ह अकेडमी (इंडिया)

सर्वधिकार सुरक्षित

पुस्तक	:	मानवता का संदेश
अनुवादक	:	क़ाज़ी अलाऊद्दीन, दिल्ली
पृष्ठ	:	103
प्रथम संस्करण	:	2022
मुल्य	:	
प्रकाशक	:	इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी (इंडिया)

इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी (इंडिया)

161—एफ, जोगाबाई, पेस्ट बाक्स न0: 9746, जामिया नगर नई दिल्ली
फोनः 26981779
ईमेलः fiqhacademyindia@gmail.com
वेबसाइटः www.ifa-india.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पृष्ठभूमि

भूमिका

कुछ आवश्यक निर्देशन

मानवता का संदेश

नियम व व्यवस्था और वर्तमान समय की मांग

1— इस्लाम की शिक्षाएं

2— इस्लामी शिक्षाओं का प्रकाशन एवं प्रसारण

3— इस्लाम और हिन्दूस्तान

4— आज़ादी के बाद

5— खाई को पाटने की आवश्यकता

6— विभिन्न समारोह (सभाएं)

7— दंगों की लहर

8— मानवता के संदेश का आन्दोलन

9— मनुष्य की एकता न कि धर्मों की एकता

10— शपथ का आधुनिक अर्थ

11— मानवता सन्देश का उद्देश्य

12— नियम एवं व्यवस्था

13— अवशिष्ट लाभ का नियम

14— दावती भावना

15— व्यवहारिक नमूना
16— प्रशिक्षण प्रबन्धन
17— दृढ़ विश्वास पक्का इरादा
18— प्रदर्शन से मनाही
19— प्रबन्धक की आवश्यकता
20— सभाएं
21— मानवता के संदेश की सीमाएं
22— निर्माणकारी चिन्ताएं
23— समाजिक सम्पर्क
24— जन सभाएं
25— संवाद एवं वार्तालाप के आधार
26— साहित्य की उपलब्धता
27— कल्याणकारी सेवाएं
28— नोट
29— चिकित्सा सहयोग
30— शैक्षणिक सहयोग
31— आर्थिक सहायताः
31— सामाजिक सहयोग
33— मुस्लिम आन्दोलन की कल्याणकारी कार्यक्रम
34— जमाअत उलेमाए हिन्द
35— जमाअते इस्लामी हिन्द
36— इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग

37– रज़ा एकाडमी

38– आल इंडिया उलेमा बोर्ड

39– आल इंडिया मिल्ली कौंसिल

40– सिफाबियतुल माल

41– मुस्लिम राष्ट्रीय मंच

42– आल इंड़िया पयामें इंसानियत फोरम

☆☆☆

भूमिका

ईश्वर ने इस विशाल ब्रहमांड को जिस जीवप्राणी के लिए बनाया है वह मनुष्य ही है। सूरज एवं चांद से लेकर ज़मीन के अन्दर निवास करने वाले कीड़े और निकलने वाले पौधे यह सब एक साथ इसी जीवप्राणी एवं मनुष्य की सेवा में व्यव्स्त हैं। और सर्व–शक्तिमान ईश्वर ने मनुष्य को पैदा किया है अपनी बन्दगी एवं पूजा के लिए, ईश्वर का आदेश है कि मनुष्य ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य जीव की या स्वयं अपनी इच्छा की पूजा का शिकार न हो जाये, समस्त ईशदूत (संदेष्टा) जो इस दुनिया में अवतरित हुए वह इसीलिए आये ताकि मानवता को इसका भूला हुआ पाठ याद दिलाया जाये, और दयालु ईश्वर से इसका सम्बंध मजबूत किया जाये इसलिए वास्तव में सर्वश्रेष्ठ कर्म मानवता की सेवा है और मानवता के लिए लाभप्रद बनना है।

ईशदूत मुहम्मद साहब (सल्ल0) ने फरमायाः

''खैरुन्नास मन यनफअ़न्नास''।

सर्वश्रेष्ठ इंसान वह है जो अपने जैसे दूसरे इंसानों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सके।

मानवता का एक लाभ यह है जो उसको इस दुनिया में चाहिए, खाना– पीना, दुनिया की लाभ ाआवश्यक्ताएं, पत्नी, बच्चे, और दूसरा लाभ वह है जो हमेशा हमेशा के लिए आख़िरत (परलोक) के जीवन के लिए

अपेक्षित है और वह है ईश्वर की इच्छा, ईश्वर की प्रसन्नता, जितने नियम इस धर्म शास्त्र में हैं या ईश्वर की तरफ से पहले धर्म शास्त्रों में आये इन सबका उद्देश्य यह था कि मानव अपने रचईता एवं पालनहार मालिक की इच्छाओं, आदेशों को जान जाये कि कौनसी चीज़ें ईश्वर को पसन्द हैं और कौनसी चीज़ें ईश्वर के नापसंद हैं, लेकिन अफसोस कि शैतानी शक्तियों के प्रभावी होने की वजह से और स्वयं मानव के अन्दर जो मनोवृत्तियां, मनोयोग – इच्छा का चोर छिपा हुआ है उसकी चालबाजियों एवं कारगुजारियों के कारण से अक्सर यह परिस्थितियां आती हैं कि इंसान अपने रचईता व मालिक को भूल जाता है। और कभी कभी तो स्वयं को ईश्वर बनने की कोशिश करता है, जब मनुष्य ईश्वर को याद रखता है और ईश्वर से इसका सम्बंध मजबूत होता है, तो इसमें दो अवस्थाएं पैदा होती हैं, एक तो ईश्वर के सामने डर और दूसरे मनुष्यों के सामने लगाव, सद्व्यवहार, अच्छा आचरण, ऐसा नहीं हो सकता कि एक आदमी वास्तविक रूप से धार्मिक हो और वह इंसान का भला सोचने के बजाए उसका बुरा सोचने लगे, तो यह जो दूसरा पहलू है अपनी आन्तरिक शिक्षाओं का कि मानव का सम्बन्ध अपने जैसे लोगों से मजबूत हो, इसका सम्बंध दूसरे मानवों के साथ उत्तम हो, इसमें भाईचारा हो, इसमें आवभगत करने की भावना हो, इसमें एक दुसरे का सम्मन हो, एक इंसान की तकलीफ दूसरे इंसान को तड़पाती हो, और एक इंसान की परेशानी दूसरे इंसान को चिन्तीत करती हो, यह जो मनोदशा है यह पहलू धर्म का है, धार्मिक नियमों का है इसको हम लोग मानवता का संदेश से सम्बोधित करते हैं, क्योंकि यह जिसमें मुसलमान और ग़ैर

मुस्लिम सब बराबर हैं, ईमान वाले और ईमान से वंचित लोग सभी के लिए यह एक ज़रूरत है, इस लिए जरूरत इस बात की है कि हम इस देश में जिस देश में अस्सी प्रतिशत बहुसंख्यक के मध्य हम एक धार्मिक अल्पसंख्यक की हैसियत से जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इस परिस्थिति में हम इन नैतिक मूल्यों एवं आचरण और इन शिक्षाओं को लेकर आगे बढ़ें जिनसे समस्त मानव की भलाई हो सके, हमारे इस आचरण से जब लोग प्रभावित होंगे, तो जैसे इंसानों से इसका संपर्क उत्तम होगा वैसे ही इनको ईश्वर से भी अपना रिश्ता जोड़ने का अवसर प्राप्त होगा। इस लिए हमारे कुछ बुजुर्गों ने इस देश में मानवता का संदेश का आन्दोलन चलाया और इस पर बहुत अधिक ज़ोर दिया, अफसोस कि हम इस पर अधिक ध्यान नहीं कर सके, वरना आज इस देश के हालात इससे बहुत अच्छे होते जो इस समय है लेकिन बहरहाल हमें अब भी कोशिश करनी चाहिए कि हम मानवीय आधारों पर देश के लोगों से अपना रिश्ता मजबूत रखें।

''प्रेम, करूणा, दोस्ती, दया, शिष्टा, सेवा, भलाई और विविधता में एकता का संगम है मानवता का संदेश''।

इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी दक्षिण एशिया का इस लिहाज से सबसे बडा श्रेष्ठ और विश्वसनीय संगठन है, यह केवल शैक्षणिक, फ़िक़्ही और विचारणीय विश्लेषण के कामों पर अपना ध्यान रखता है, और हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश में लग–भग समस्त प्रसिद्ध विद्वानों लेखकों का सहयोग प्राप्त है, इसने अपने कामों में प्रशिक्षण, आधुनिक मांगों से परस्पर चिन्तनीय समस्याओं पर सोच विचार इस्लामी ज्ञानों के विभिन्न मैदानों में प्रशिक्षण के द्वारा मानवीय समस्याओं के निस्तारण

पर पूरा ध्यान देता है। एकेडमी के अन्तर्गत अब तक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 30 फ़िक़्ही और 89 चिन्तनशील प्रशिक्षण पर कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके हैं, वह हमेशा दीनी व आधुनिक संगठनों के शिक्षित लोगों के प्रशिक्षण पर भरपूर परिश्रम करता आया है।

इसी सिलसिले की एक कड़ी महत्त्वपूर्ण फ़िक़्ही और चिन्तनशील विषय पर वार्तालाप व विश्लेषण का काम भी है, जिनमें ऐसी समस्याओं को विश्लेशषण का विषय बनाया जाता है जिनकी आधुनिक काल में आवश्यकता है और जिन पर काम नहीं हुआ है, या ज़रूरत से कम हुआ है यह पत्रिका जो इस समय कार्यकर्त्ता के हाथों में है इसी सिलसिले की एक कड़ी है जिसको एक नवजवान उत्साह और विश्लेषण के विशेषज्ञ माननीय मौलाना मुहम्मद नफ़ीस खान नदवी ने एकेडमी की प्रार्थना पर इस कार्य को पूर्ण किया है। और विषय से सम्बंधित समस्त आवश्यक पहलुओं पर सोचविचार एवं वार्तालाप में लाने की कोशिश की है, एकेडमी ने अब तक फ़िक़्ही लेख खंडों और खोजपूर्ण निबन्धों को सम्मिलित किया लग–भग 250 से अधिक संक्षिप्त एवं विस्तृत पुस्तकें प्रकाशित की हैं और बृद्धि जीवियों के क्षेत्रों में सराहनीय कार्य भी प्राप्त किया।

आशा है कि एकेडमी की यह नवीनतम कोशिश भी उत्साह के साथ ली जायेगी, ईश्वर से प्रार्थना है कि एकेडमी के ज्ञानात्मक यात्रा को जारी रखे, और यह कारवां मंज़िल की तरफ बढ़ता रहे

ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

(महासचिव)

कुछ आवश्यक निर्देशन

मानवता के संदेश का काम जितना आवश्यक है उतनी ही मर्मस्पर्शी और संवेदनशील भी है, इसी लिए इससे जुड़े लोगों को कुछ मुख्य बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ताकि कोशिश व्यापक और सकारात्मक साबित हो सके।

☆ मानवता का संदेश का काम राजनैकि दृष्टिकोण एवं क्षेत्रियता से स्वतन्त्र है।

☆ इसका आधार सिर्फ मानवीय मुल्य हैं, इसलिए इस्लाम का परिचय बोल के बजाए कर्म से कराया जाये।

☆ ज़िम्मेदार और कार्यकर्त्ता के लिए आवश्यक है कि रोज़ा– नमाज़ में नियमिता और निपुण हों और अपनी योग्यता व प्रशिक्षण के लिए चिन्तनशील रहें, विपरित परिस्थितयों में भी धैर्य, सन्तोष व मजबूती के साथ एकता पर स्थापित रहें।

☆ व्यक्तिगत सेवा के बजाए सामूहिक सेवा को वरीयता दी जाये।

☆ जन सेवा का काम स्थिर स्वभाव, साहस सहृदयता और सामुहिक व्यवस्था का संवाहक एवं परियायक है।

☆ मानवता का संदेश के ज़िम्मेदार एवं कार्यकर्त्ता राजनैतिक कार्यक्रमों और समाज के वंछित एवं सन्देहस्पाद व्यक्ति की

बैठकों से दूर रहें।

☆ मजबूर, अपंग असहाय लोगों की इज्जत व आवभगत करें। इनसे अशोभनीय भाषा दयनीय हीनता से पेश न आयें, फोटोग्राफी और वीडियोंग्राफी में इनके नामों का ध्यान रखें।

☆ परेशान महिलाओं में प्रशिक्षण प्राप्त महिला ही काम करें, पुरूषों को इनसे मेलजोल और निकटता से परहेज करना चाहिए।

☆ कुछ समय के लिए मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम कल्याणकारी संगठनों से सहयोग लिया जा सकता है लेकिन ऐसा मिशनरियों से चौकन्ना रहने की आवश्यकता है जो मुस्लिम सफ़ों में घुसकर इनके मध्य भेदभाव पैदा करती हैं।

☆ अन्य कल्याणकारी संगठनों और मानवता का संदेश की कल्याणकारी कार्यक्रमों में लक्ष्य और उद्देश्य का मुख्य अन्तर है, इस लिए किसी भी इदारे से स्थाई संम्बंध उचित नहीं है।

☆ सरकारी प्रतिनिधत्व, क्षेत्र के ज़िम्मेदारों और समाज के प्रभावशाली व्यक्तियों से मित्रता एवं तालमेल बनाया जाये ताकि इनकी तरफ से कोई रुकावट पैदा न हो।

☆ धन प्राप्ति की व्यवस्था को पारदर्शित रखें और जनसाधारण चन्दे से पूर्णरूप से परहेज करें।

☆☆☆

मानवता का संदेश

नियम व व्यवस्था और वर्तमान समय की मांग

मुहम्मद नफीस खान नदवी

जब प्रत्येक प्रकार के माध्यम और अवसर प्राप्त हों, न चौकीदार हो, न थानेदार, न कोई देखने वाला हो, न कोई रोकने वाला, जब चोरी, गुनाह, क़त्ल या अन्याय करना सम्भव व सरल हो, मगर इंसान के अन्दर की दशा उसका हाथ पकड़ ले और वह उस अपराध से दूर रहे, इसी अवस्था एवं दशा का नाम इनसानियत (मानवता) है।

आज मानव की जनसंख्या बढ़ती ही जा रही है, विकास की सीमाएं विस्तृत हो चुकी हैं। बिजली, हवाई जहाज, इन्टरनेट, एटमबम इत्यादि से मानव के विकास का अनुमान किया जा सकता है, लेकिन! मानवता का विकास इन भौतिक विकास का नाम नहीं है। मानवता का विकास का अनुमान हमारे जीवन के सांचों या भौतिक पैमानों से नहीं किया जा सकता, इसका अनुमान मानव के व्यवहार एवं आचरण और समाज के दृष्टिकोण से किया जाता है। और वास्तविकता यह है कि आज हमारे चारों तरफ जीवन का जो तुफान उमड़ा हुआ है इसमें किसी को मानवता का अनुभव नहीं, ईश्वर ने मानव को सिर्फ पैर और पेट नहीं दिया बल्कि इसको एक आत्मा और दिल भी प्रदान किया है,

जिसे मानवीय इच्छाओं व आवश्यकताओं और भौतिक मांग के समूहों में समायोजित एवं व्यवस्थित कर दिया गया है।

राजनैतिक मतभेद और शासन व्यवस्था तो फुरसत की बातें हैं। शासन पर क़ब्ज़ा चाहे किसी भी पार्टी का हो, चाहे कोई प्रधान या मंत्री हो, वास्तविक शासन तो अपने आपके मन, इच्छाओं की है और वास्तविक इच्छाओं एवं आवश्यकताओं का है।

समय की मांग है कि मन की इच्छाओं की पूर्ति की जाये, दिल की आग बुझाई जाये, चाहे मानव के ख़ून की नहरें बहें, लाशों को रौंदना पड़े या देश के देश वीरान व तबाह–बरबान हो जायें।

ईसानों की इतनी बड़ी आबादी में मानवता की आवाज़ कहीं से सुनाई नहीं देती, और अगर किसी को मानवता की गिरावट का एहसास भी है, तो उसके अन्दर इतना साहस नहीं कि वह आवाज़ उठा सके, पूरे देश में एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं जो मानवता के लिए बलिदान दे सके। वास्तव में यह साहस सिर्फ ईशदूत (सन्देष्टा) में थी। पैगम्बरों ने समस्त संसार को चुनौती देकर के मानवता के विरुद्ध जारी बग़ावत को रोका, इनके सामने लज्जतें और धन दौलत लाई गयीं मगर इन्होंने सबको ठुकरा दिया और इंसानियत के दर्द में अपनी जान को जोखिम में डाल दिया।

पैग़म्बर (ईशदूत) इस संसार से विदा हो गये लेकिन इनकी शिक्षाएं आज भी ज़िन्दा (जीवित) है। ईशदूतों द्वारा स्थापित की गई शिक्षाओं, लेखों पर इनके अनुसरण कर्ताओं ने इंसानियत की मसीहाई का मोर्चा संभाला और अपने–अपने क्षेत्रों में यह जागरुकता पैदा की

और यह अनुभव कराया कि अगर मानवता ने दम तोड़ दिया तो, मानव और पशुओं के जीवन में कोई अन्तर शेष नहीं बचेगा।

इस्लाम की शिक्षाएं:

मानवता की वास्तविक कल्याण और व्यापक सफलता पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देने वाला धर्म इस्लाम है। इस्लाम की शिक्षाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों पर प्रभावो प्रभावशाली है, जीवन व्यक्तिगत हो या सामूहिक, इस्लाम ने प्रत्येक अवसर के लिए ऐसी शिक्षाएं दी हैं कि इनको अपनाने वाला एक सफल और उपयोगी जीवन व्यतीत कर सकता है। इसी तरह समाजिक जीवन के लिए भी इसकी अनेक और पूर्ण शिक्षा निर्देश ऐसी है कि वह संसार की मानवता के लिए एक लगातार बहने वाला शिक्षा श्रोत हैं, पवित्रा आकाशीय ग्रन्थ कुरआ़न व हदीसे नबवी में श्रेष्ठ एवं व्यापकता के साथ उल्लेख मिलता हैं और ईशदूत आदरणीय मुहम्मद साहब का जीवन इनका सर्वश्रेष्ठ आर्दश प्रस्तुत करता है जो कि समानरूप से सभी के लिए एक विशेष प्रकार का उदाहरण प्रदान करता है। इस्लाम और अन्य सम्प्रदायों एवं धर्मों में आधारभूत अन्तर यही है कि प्रत्येक धर्म व्यक्ति को उदघोषित एवं आदेशित करता है और इसी का सुधार एवं विकास पर जोर देता है जबकि इस्लाम धर्म सम्पूर्ण मानवता का समान रूप से आदेशित एवं सम्बोधित करता है, इसके लिए अरबी, ग़ैर अरबी, काले, गोरे का अन्तर कोई हैसियत नहीं रखता, इसी तरह स्थान या क्षेत्र की सीमा, भौगोलिक सीमाएं और जातियों की हद बन्दियां इसके सन्देश के

प्रसारण में कोई स्थान नहीं रखती है। और न ही अन्य शासन एवं प्रशासन की व्यवस्था प्रबन्धन के दृष्टिकोण इसके मार्ग में रुकावट बनते हैं।

इस्लाम एक ऐसा मानवीय समाज बनाना चाहता है जो शान्तप्रिय, सौहार्दपूर्ण बहुमुखी और समाजिक न्याय व समान न्याय से परिपूर्ण समाज हो, जिसमें न छोटे बड़े की असमानता, परस्पर ईर्ष्या विद्वोष से शुद्ध, दुःख घृणा न हो, न दिली दुख न दिल आज़ारी की सम्भावना, जिसके कारण एक मानवीय समाज अनैतिक आचरण व व्यवहार के कारण प्रदुषित व अनैतिक सड़ान का शिकार हो जाता है इसी लिए जो चीज़ें मानवीय समाज प्रदूषित करने में सहयागे करती है, और समाज को खराब करती है, इस्लाम धर्म ने इन सब पर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि के साथ एवं कठोरता के साथ पाबन्दी लगा दी है।

समाज में पुरूष–स्त्री, अमीर–गरीब और बलवान–निर्बल व्यक्ति की स्थिति होती है जिनके लिए इस्लाम ने निश्चित अधिकार वर्णित किये हैं, इसकी आत्मा से व्यक्तिगत जीवन, ख़ानदानी जीवन, समाजिक जीवन, व्यवसायिक जीवन, राजनैतिक जीवन और आचरण व व्यवहार इन सब दशाओं पर इस्लाम ने स्पष्ट रूप से निर्देश दिये हैं। उदाहरण के लिए आकाशी पवित्र ग्रन्थ कुरआन में किसी भी व्यक्ति के अपशब्द भाषण व लेख या समान्य बोलचाल में अपवित्र एवं अमार्यादित भाषा की पूर्णरूप से मनाही की गयी है, ताकि मानवीय समाज में एक साधारण व्यक्ति भी हीन भावना या दयनीय महसूस न करे या अपमान या अपमान का निशाना न बन सके इसके दिल को ठेस न पहुंचाए।

”لَايُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظُلِمَ“ (النساء:١٤٨)

ईश्वर किसी की बुरी बात का चर्चा पसन्द नहीं करता सिवाए इसके जिस पर ज़ुल्म हुआ हो। (अल निसाः 147)

एक दूसरे से घृणा, दिल को दुख पहुँचाने की ममानियत और मानवीय समाज को श्रेष्ठ बनाने की इससे बड़ी दलील क्या होगी कि इस्लाम धर्म वास्तविक धर्म होने के बावजूद इस्लाम के लोगों को इस बात का सशर्त आदेश देता है कि जो लोग ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को पूजते हैं उनको बुरा न कहो, ताकि धार्मिक आस्था के दिल को दुःख का माहौल न बने और धर्म के नाम पर घृणा ज़हर की राजनीति का दौर शुरू न हो जाये, ईश्वर का कथन हैः

”وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّو اللّٰهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ“ (الانعام:١٠٨)

और जिनको वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को पुकारते हैं तुम उनको बुरा–भला मत कहो कि वह न समझी में हद से आगे बढ़कर ईश्वर को बुरा भला कहने लगे।

यद्यपि कभी–कभी झूठे प्रोपेगन्डों (दुष्प्रचार) और अफवाहों के आधार पर पूरा मानवीय समाज मानसिक बिखराव और बड़ी गलत फहमियों का शिकार हो जाता है, जिसके कारण आपस में एक दूसरे के साथ रहने के बावजूद बड़ी बड़ी गहराईयां एवं दूरिया बढ़ जाती हैं।

पवित्र पुस्तक कुरआन ने इस कार्यों की भी जड़ काट दी है। पवित्र ग्रन्थ कुरआन का कथन हैः

”يـا أيهـا الذين آمنوا إن جاء كم فاسق بنبأ فتبينوا أن تصيروا قوما

بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ" (الحجرات:٦)

ऐ ईमानवालों! अगर कोई कपटी, झूठा तुम्हारे पास कोई ख़बर ले कर आये तो अच्छी तरह जांच लो कि कहीं तुम नादानी में किसी सम्प्रदाय या समूह को नुक़सान पहुंचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किये पर पछतावा हो। (अल हुजरातः 6)

इस्लामी शिक्षाओं में जिस तरह इन अनैतिक बीमारियों से दूर रहने की शिक्षा दी गयी है जो मानवीय समाज को दीमक की तरह चाट जाती है, ठीक इसी तरह इन बातों की चेतावनी भी दी गयी है जिन से इंसानी समाज में परस्पर सहयोग एवं सामजस्य लाता है और एक शान्तिप्रिय, सौहाद्रपूर्ण वातावरण बनता है पवित्र कुरआन में बिना किसी भेद–भाव रंग–नस्ल प्रत्येक समूह व्यक्ति के लोगों के साथ सामान अवसर पर विशेषकर एहसान एवं उपकार की शिक्षा दी गयी है ईश्वर का कथन हैः

"وَقُوْلُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا" (البقرہ:۸۳)

और लोगों से अच्छी बातें कहो। (सूरह बक़राः 37)

आकाशीय ग्रन्थ कुरआन ने समस्त मनुष्यों के साथ सद्आचरण और प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं कृपाशीलता का आदेश देने के अतिरिक्त मानव समाज के विभिन्न कमज़ोर व्यक्ति और समूह के साथ अच्छे व्यवहार करने की शिक्षा दी है और इनके अधिकार बता कर इनके सम्मान में वृद्धि किया है, मानव इतिहार में स्त्रियों को हमेशा कमज़ोर, प्रयोग करने की नग्न वस्तु समझी जाती रही है, जिसने प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय और क्षेत्र में जुल्म व ज़्यादती के वातावरण

में जीवन व्यतीत किया है, मगर इस्लाम धर्म ने स्त्री के अधिकार का सटीक व शक्ति के साथ आवाज उठाई और प्रभावशाली तरीक़े से व्यवस्थित किया और इनके अधिकार को रक्षा की हैसियत से सामने आया और मानव समाज में औरत का स्थान दिलाया और इसको सम्मान भी प्रदान किया, अर्थात सबसे पहले इन लोगों के कल्पनाओं पर रोक लगाई गयी जो स्त्री को नग्न एवं अर्धनग्न वस्तु समझ रहे थे और लड़कियों को जीवित ज़मीन में गाड़ देते थे:

”وَ إِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثٰى ظَلَّ وَ جُهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيْمٌ يَتَوَارَىٰ
مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْءِ مَا بُشِّرَ بِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِى
التُّرَابِ أَلَاسَاءَ مَا يَحْكُمُوْنَ“ (النحل:٥٩-٥٨)

पवित्र ग्रन्थ कुरआन में है। और जब इनमें किसी को लड़की की खुशखबरी दी जाती है तो इसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह घुटकर रह जाता है, जो बुरी खुशख़बरी इसे मिली इसी कारण से लोगों से मुंह छिपाए फिरता है (सोचता है कि) उसे अपमानित होकर रहने दे या मिटटी में दाब दे, देखो कैसे कठोर एवं घिनौने निर्णय वह किया करते हैं। (अल नहलः 58—59)

स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त समाज के विभिन्न समूहों से सम्बंधित भी बड़े स्पष्ट आदेश मौजूद हैं जिससे अनुमान होता है कि इस्लाम धर्म मानव के मान—सम्मान को किस सीमा तक सम्मान की दृष्टि से देखता है और शान्ति का दूत है।

अनाथ बच्चे मानव समाज में सबसे अधिक कमज़ोर समझे जाते हैं जिनका माल हर शाक्तिशाली हड़पने की कोशिश करता है,

इनका शोषण करता है पवित्र ग्रन्थ में अनाथ बच्चों के अधिकार अदा करने की तरफ सबसे अधिक ध्यान दिलाया गया है:

पवित्र कुरआन का कथन है:

”وَ آتُو الْيَتَامٰى اَمْوَالَهُمْ وَلَاتَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلٰى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيْرًا“ (النساء:۲)

और अनाथों को इनके माल सुपुर्द करो और बुरे (माल) को अच्छे (माल) से बदल मत लो और इनके मालों को अपने मालों में मिलाकर मत खाओं वास्तव में वह बहुत बड़ा पाप है: (अल निसा:2)

पवित्र ग्रन्थ कुरआन में कुछ स्थानों पर यह भी स्पष्ट है कि एक सज्जन एक सुसज्जित समाज बनाने में न्याय का दामन कभी हाथ से न छुटने पाये, हमेशा न्याय की ओर सच बात कही जाये चाहे इसकी ज़िद में हमारा कोई निकट सम्बन्धी आता हो या अपना कोई व्यक्तिगत नुक़सान ही क्यों न हो और बुराई का बदला बुराई के समान लिया जाये, अलबत्ता नज़र अन्दाज कर देने से काम लिया जाये तो अधिक उचित बात है इन्साफ की बात कहने के सम्बन्ध में कहा गया है कि:

”وَلَايَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلٰى أَلَا تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى“ (المائده:۸)

और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर आमादा न कर दे कि तुम इंसाफ न करो न्याय करते रहो यही तकवा से क़रीबतर है। (अल माईदा: 8)

इस्लाम में जिस तरह मानवता के सम्मान की शिक्षा दी गयी

है, सुसज्जित सभ्य मानवीय समाज के विकास की शिक्षा दी गयी है सामूहिक एवं व्यक्तिगत अधिकार बताए गये हैं और समाज के विभिन्न कमज़ोर लोगों के पक्ष में पुरज़ोर आवाज़ बुलन्द की गयी है, और इनको मानव समाज में बराबरी का हिस्सा दिया गया है ठीक इसी तरह यदाकदा ऐसी कल्याणकारी और उपयोगी शिक्षाएं भी दी गयी हैं जिन से एक श्रेष्ठ समाज की संरचना तैयार होती है, जिसमें न ईष्या छल कपट होता है और न परस्पर में असमंजस्य या न समझी और हदस का रोग होता है। बल्कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति बिना भेद–भाव के धर्म सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे का आपसी सहयोग एवं कल्याण नजर आता हैं

इस्लाम ने विश्व मानवता को जो महान एवं उपयोगी शिक्षाएं प्रदान की हैं और वह मनुष्य को आचरण के जिस महान स्थान पर देखना चाहता है और जिस श्रेष्ठ समाज को बनाना चाहता है उसकी सर्वश्रेष्ठ तस्वीर ईश्वर के सन्देष्टा रसूल मुहम्मद साहब के जीवन और आप (सल्ल0) के सम्मानीय साथाी के जीवन के रहन–सहन में मिलता है, आदरणीय मुहम्मद साहब (सल्ल0) समस्त संसार के लिए ईशदूत बनाकर भेजे गये, आप (सल्ल0) का जीवन सबके लिए कृपाशीलता और आप की शिक्षाएं सम्पूर्ण विश्व मानवता के लिए एक समान कल्याणकारी और लाभकारी हैं।

यूं तो इस क्षणिक अस्थाई विश्व में सुख दुःख, प्रेम – दर्द सहनशक्ति आत्मा रखने वाले बहुत से आये और गये, बहुतों ने टुटे हुए दिलों को जोड़ने की मुहिम चलाई, प्यार व मुहब्बत की सुरीली

बांसूरी बजाई, दिलो के दर्द का निवारण किया, मगर ईशदूत आदरणीय मुहम्मद साहब (सल्ल0) की विशेषता यह है कि आप (सल्ल0) ने बिना भेद–भव, रंग–नस्ल सम्पूर्ण मानवता के लिए दयावान बनकर आये, आप (सल्ल0) के आगमन से सम्पूर्ण मानवता के उदासीन शरीर में शक्ति की लहर पड़ गयी, मानवता की सुखी खेती लहलहाती नज़र आने लगी और समाज का कोई समूह ऐसा नहीं बचा जो आप के प्रेम सागर एवं दयालुता से वंचित रहा हो, अपने पराये, जिगरी दोस्त व जानी दुशन ने आपकी कृपा और दया और आप (सल्ल0) के एहसान का खुले दिल से स्वीकार किया।

ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) के मानवीय सम्मान का अनुभव समझने के लिए सिर्फ यह एक कथन काफी हैः कि एक बार आप (सल्ल0) अपने साथियों के साथ बैठे हुए थे, उसी समय सामने से एक यहूदी का शव निकलता हुआ नज़र आया, आप (सल्ल0) शव के सम्मान में तुरन्त खड़े हो गये, कुछ साथी सहाबा ने कहा भी क्या कि ऐ ईश्वर के ईशदूत! यह तो एक यहूदी का शव है, मगर आप (सल्ल0) ने ईरशाद फरमायाः तो क्या हुआ वह यहूदी भी तो एक मनुष्य ही था।

इस्लाम धर्म विश्व स्तर पर भी एकता की दावत एवं संदेश देता है और विभिन्न धर्मों के लोगों को सामूहिक नियमों पर इकठ्ठा करने की बात कहता है कि परस्पर टकराव न हो और समान आधारों पर संगठित होकर शान्ति एवं न्याय का वातावरण स्थापित हो, एक स्थान पर किताब वालों को सम्बोधित करते हुए कहाः

"قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا" (آل عمران: ٦٤)

आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब ऐसी बात की तरफ आ जाओ जो हम में तुम में बराबर है (वह यह) कि हम सिर्फ ईश्वर की पूजा करें और इसके साथ कुछ भी सम्मिलित न करें। (आले इमरानः 64)

अर्थात एक श्रेष्ठ आदर्श समाज बनाने के लिए जो निर्माणकारी शिक्षाएं सम्भव थीं, इस्लाम धर्म ने वह सब विश्व मानवता को प्रदान कीं और बिना किसी धार्मिक भेद भाव के सम्पूर्ण मानवता को इससे लाभाविन्त होने का निमन्त्रण दिया।

इस्लामी शिक्षाओं का प्रकाशन एवं प्रसारणः

इस्लाम धर्म की यह प्रभावशाली विशेषता है कि इसकी आस्था विश्वास में इसकी मानवता एवं उदारवादी शिक्षाएं भी प्रगतिशील होती हैं, चुनांचे ईशदूत मुहम्मद साहब (सल्ल0) ने जब पड़ोसी देशों ईरान, रूम, मिस्र, यमन, हबशा के राजाओं व दूसरे शासकों के नाम पत्राचार प्रेषित किये और उन्हें इस्लाम का निमन्त्रण दिया, तो इन पत्रों के पहलू ब पहलू इस्लामी शिक्षाओं ने भी इन देशों में दस्तक दी।

इस्लामी शिक्षाओं के अन्दर मानवता की मसीहाई के ऐसे प्रभावशाली पहलू थे जिन्हों ने तीर्व गति और संगठिता के साथ अपने पड़ोसी देशों को प्रभावित किया, यह तीव्र गति पहाड़ों, वादियों, मरूद्यानों और मरूस्थलों में एक समान रही, इस्लामी की सामूहिकता

न कभी गोरे–काले, अरबी–ग़ैर अरबी, देहाती– शहरी के साथ भेद भाव नहीं की, इसके शासन प्रबन्धन में अधिकार और कल्याण के वह समस्त तत्त्व जमा थे जिनका मानवता अपने आदाबे ज़िन्दगी और रहन सहन की विभिन्नता के बावजूद मांग करती है, यही कारण है कि जितनी भी जातियां इस्लाम के साये में पहूँचीं वह अपने लाभकारी तत्त्वों के साथ न सिर्फ विकारस एवं प्रगति करती रहीं बल्कि इस्लामी शिक्षाओं का भाग बन गयीं।

ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) के देहान्त के पश्चात् माननीय अबू बक्र सिद्दीक़ रजि0 की ख़िलाफ़त काल शुरू हुआ, प्रारंभिक दो वर्ष इन लोगों से युद्ध में व्यतीत हुए जो इस्लाम की सामूहिकता, संगठन इसकी प्रारंभिक और केन्द्रीय शासन के विरुद्ध थे, शुरूआती विरोध और समस्याओं के निस्तारण के पश्चत् अबूकक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने शाम और ईराक की तरफ फौज भेजी और इस्लाम का परचम अपनी समस्त विशेषताओं के साथ मातृभूमि अरब से बाहर भी लहराने लगी।

विजय का जो सिलसिला हरज़ अबू बक्र रज़ि0 के साथी माननीय उमर रज़ि0 और माननीय उस्मान ग़नी रज़ि0 ने इसे बहुत ही उंचाईयों तक पहुंचा दिया और आधी सदी से कम वर्षों में ही इस्लाम ईरान और अफ्रीक़ा तक पहुँच गया।

बनू अब्बास के काल में इस्लाम तीन महाद्वीपों अफ्रीक़ा, एशिया और यूरोप तक फैल गया, इस दौरान में इस्लाम धर्म की भौगोलिक सीमाए पूर्व में वर्तमान चीन की सीमा तक, पश्चिम में वर्तमान मराकश तक जो उस ज़माने में पश्चिमी अफ्रीक़ा की आखरी आबादी थी,

दक्षिण में समस्त मावराउल नहर का क्षेत्र और उत्तरी साईबेरिया, ऐशिया का विस्तृत भाग बहरे रूम का समस्त पूर्वी किनारा और पेरेनीस (Pyrenees) की पहाड़ियां जो स्पेन और फ्रांस में हद्दे फासिल है और दक्षिण में मजमाउल जजाएर यानी दक्षिण पूर्वी एशिया, जजीरे जाफना जो श्रीलंका में है और अफ्रीक़ा के तटीय क्षेत्र के उत्त्र तक फैल गयी थीं।

इस व्यापक और विस्तृत भूमि में परस्पर विभिन्न प्रकार की सभ्यता और शासन मौजूद थे जहां जीवन का एक ही उद्देश्य था अधिक से अधिक शक्ति, धन दौलत की प्राप्ति चाहे इसकी प्राप्ति के लिए सारी मानवता को ध्वस्त ही करना पड़े, इस्लाम के आगमन ने इसके प्रतिकूल, उदारता दयालुता की भावना पैदा की, जीवन का वास्तविक उद्देश्य बताया, सभ्यताओं के टकराव को दूर किया, लाभकारी तत्त्वों को प्रोत्साहन दिया और फिर इस्लामी शिक्षाओं को इस तरह प्रसारण और अपनापन प्राप्ति हुआ कि वह विभिन्न सभ्यताओं, विचारों, भाषाओं का केन्द्र बन गया।

इस्लामी शिक्षा के विकास में ऐसे आधारभूत तत्त्व मौजूद थे और इसका प्राकृतिक धर्म और मानव स्वभाव, आचरण के अनुकूल होना भी है इसमें न कोई लोच है और न किसी तरह की बेबसी, बल्कि इसके अन्दर मनुष्य के विभिन्न हालात व स्वभाव के मांगों को पूरा करने की भरपूर विशेषताएं हैं। इसी लिए इसे स्वीकार करना अत्यन्त सरल व आसान है, चुनांचे मानवीय जीवन का कोई ऐसा पहलू या मानव प्रकृति का कोई ऐसी मांग नहीं जिसकी पूर्ति इस्लाम ने

अपनी शिक्षाओं के द्वारा न की हो।

यह वास्तविकता है कि संसार में जहां भी इस्लाम ने दस्तक दी वहां मानवता के मुर्दा शरीर में एक नयी आत्मा दौड़ गई, सिसकती बिलकती मानवता ताजा दम हुई और एक ऐसा वातावरण व समाज अस्तित्व में आया जिसमें लोगों को जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त हुआ और दुनिया ने हमेशा की तबाही और बढ़ते हुए अन्धकार से मुंह मोड़कर दोबारह विकास एवं प्रगति के मार्ग पर चलना शुरू किया।

इस्लाम और हिन्दूस्तानः

मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली ने हिन्दुस्तान को ''अकालुल अमन'' से सम्बोधित किया था, यानी जितनी क़ौमों और सभ्यताएं इस देश में आई वह सब अपने शासन काल के परम्परा को भूलकर यहां की देवमलाई सभ्यता में मिल गयीं, सिर्फ इस्लाम धर्म वह अकेला धर्म है जो सदियां गुजरने के बावजूद अपनी क़ौमी व मिल्ली पहचान एवं विशेषता के मौजूद है, इसकी शिक्षाएं आज भी जीवित और समाज सेवा के मानवीय भावना आज भी ताजा हैं।

लेकिन यह सोचनीय एवं चिन्तायोग्य पहलू यह भी है कि लगभग हजार वर्ष शासन करने के पश्चात यहां के मुसलमान किसी भी काल में एक ऐसा समाज प्रस्तुत न कर सके जो इस्लामी शिक्षाओं और इस्लामी जीवन का आदर्श हो, इस देश की ग़ैर मुस्लिम बहुसंख्यक को यइ नहीं समझायां जा सका कि ''एक ईश्वर का विश्वास'' व रिसालत और प्रलोक पर विश्वास पर आस्था के परिणाम

में ऐसा साफ सुथरा समाज उत्पन्न होता है जहां शासक अपने आप को ईश्वर के सामने उत्तरदायी और ईश्वर का सेवक समझता है, जहां व्यापारी वस्तुओं को इकठ्ठा (जमाखोरी) नहीं करता, जहां कारीगर बेईमानी नहीं करता, जहां श्रमिक काम चोरी नहीं करता, जहां गरीबों, कमजोरों और शक्तिशाली समूह पर रहमदिली से पेश आया जाता है। अगर कोई छोटे से छोटा समाज भी हमें ऐसा दिखा सकते कि जहां इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार कार्य एवं व्यवहार भी हो तो हम इस देश के ग़ैर मुस्लिमों को दुनियाभर के यहूदियों व नसारा आतिश परस्त, मजूस व बुतपरस्तों को सर उठाकर निमन्तरण देते कि यह है इस्लाम और यह हैं इस्लामी शिक्षाएं।

देश हिन्दुस्तान की यह विशेषता रही है कि जहां यह देश एक तरफ विभिन्न क़ौमों, नस्लों और सभ्यताओं की जन्मस्थली और गहवारा रहा हो, वहीं दूसरी तरफ यहां के सांस्कृति धाराओं में पूर्व की पारम्परिक मानवता मित्रता और मानव में आवभगत के रुझानात मौजूद रहे हैं, यही कारण है कि यहां के धार्मिक विद्वानों ने हमेशा सांस्कृति व समाजी नियमों और मानव मूल्यों को अपनाने पर ज़ोर दिया है चुनान्चे सन्तो, ऋषियों, पीरों–फक़ीरों एवं सूफियों की शिक्षाओं व उनके जीवन शैली ने यहां की जनसाधारण जीवन को विशेषरूप से प्रभावित किया और यहां के कलाओं लतीफ़ों, शेरो अदव, दर्शन चिन्तन में मानवता का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

लेकिन जब देश का शासन अंग्रेजों के हाथों में आया तो अंग्रेज़ों ने विशेष कर इस देश के शान्तिप्रिय इन्सान दोस्त माहौल को

निशाना बनाया और ''लड़ाओं और शासन करो'' की नीति अपनाई, दर्जनों हिन्दू मुसलमान घृणा की नीतियां व क़ानून लागू किये, जिनसे इनका शासन बढ़ता गया, लेकिन एक बड़ी संख्या इस नीति से पूरी तरह जागरुक थी और अंग्रेजों के उद्देश्यों से पूरी तरह बाखबर थी, इन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता की कोशिश कीं और इन्हें आजादी के एक मंच पर एक जूट किया जिसके परिणाम स्वरूप अंगेज सरकार की आधार शिला कमज़ोर हुई, इन्क़लाब ज़िन्दाबाद के नारे पूरे देश में गुंजने लगे, बग़ावतों और बलिदानों का सिलसिला शुरू हुआ अन्त में अंग्रेज देश को खाली करने पर मजबूर हुए और फिर दिनांक 15 अगस्त सन् 1947 ई0 को इस देश को आज़ादी का सूरज देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज़ादी के बादः

देश आज़ाद हुआ लेकिन जिस तेजी के साथ नैतिक पतन, मानवपस्ती और मानव मुल्यों की कमी का सिलसिला शुरू हुआ इससे स्पष्ट अनुमान होता था कि देश आज़ाद हो गया लेकिन आत्मा अन्दर से गुलाम है, ब्रिटेन या किसी अन्य देश शक्ति का नहीं दौलत, शक्ति, आतंक, शासन और संकुचित मानसिकता और तंगदिली का।

अंग्रेज़ इस देश से चले गये लेकिन जाते जाते यहां के निवासियों को धार्मिक खानों में बांट गए, वह देश का ऐसा इतिहास पूर्ण कर गये जिसमें मुसलमानों के आचरण को पूरी तरह निष्क्रय करके और गलत तरीक़े से पेश किया गया है। वर्तमान जनसंख्या एवं

नवयुवक इन्हीं अप्रमाणित इतिहास पर आस्थावान है। जो अंगेज़ों से इसको विरासत में मिली है मतभेद व विरोध की इस खाई को पाकिस्तान की स्थापना ने और भी गहरा कर दिया जिसके प्रभाव में यहां की गंगा जमुनी सभ्यता भी दफन होकर रह गयी।

अफसोस की बात यह है कि यहां के साम्प्रदायिक समाज दुश्मन तत्त्व ने भी अंग्रेज़ों की ही नीति का अनुसरण किया, शासन तक पहुंचने और इस पर स्थापित रहने के लिए धार्मिक घृण एवं भेदभाव का सहारा लिया, और यहां के निवासियों को धर्म के नाम पर समूहों और संगठनों के रूप में एकत्रित कर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप फसाद का एक सिलसिला चल पड़ा, कभी जाति बिरादरी के नाम पर और कभी धर्म के नाम पर मनुष्य—मनुष्य के खून का प्यासा हुआ, लाखों जानें क़त्ल हुईं और अरबों खरबों की सम्पति नष्ट हुई। यह दंगा फसाद भारत के मत्थे पर बदनुमा दाग़ बनकर उभरे जिनसे देश की आधारशीला हिल गयी और प्राकृतिक संसाधनों एवं निर्माणकारी विशेषताओं से भरपूर यह देश विकास के मार्ग पर दौड़ने के बजाये दुराचार अव्यवहारिक एवं अमानवीय समस्याओं में उलझ कर रह गया।

खाई को पाटने की आवश्यकता:

इतने बड़े और विस्तृत देश में ढूंढ़ने से भी ऐसे व्यक्ति नहीं मिलते थे जिन्हे दिल व आत्मा को जागरुक करने और धार्मिक भेदभाव को पाटने की चिन्ता हो, जो लोगों को देश के इन वास्तविक ख़तरे से

सावधान और सचेत करे, बल्कि ऐसे संगठनों और जमाअतों की अधिकता होती गयी जिन्होंने मुसलमानों को मिटाने या कम–अजकम इनकी धार्मिक पहचान एवं सामूहिक विशेषताओं को समाप्त करने का बीड़ा उठाया, और इसी के द्वारा अपने आर्थिक व राजनैतिक लाभ प्राप्त किये यह दशा सिर्फ मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि पूरे देश की एकता के लिए खतरे की घंटी थी।

कुछ मुस्लिम नेताओं के विशाल वृद्धि और दिल ने अनुभव कर लिया था कि अगर देश की यही दशा रही और धार्मिक मतभेद इसी तरह फैलती रही, तो न यह देश बचेगा और न बलिदानों के बाद मिली हुई आज़ादी बचेगी, न धार्मिक स्थान रहेंगे और न शैक्षणिक संस्थान सुरक्षित रहेंगे, नाव डुबेगी तो बिना भेद भाव भाषा धर्म सम्प्रदाय सब के सब डुबेंगे, हालत को सामान्य करने के लिए अगर देश के बहुसंख्यक के लीडर व बुद्धिजीवि सामने नहीं आते तो मुसलमानों को उसके लिए आगे आना चाहिए और इस खाई को पूर्ण करना चाहिए, क्योंकि इनके पास जो नबवी शिक्षाएं और सांस्कृतिक एवं आचरणीय मूल्य हैं, संसार का प्रत्येक धर्म इससे परिचित है, अर्थात इस देश में मुसलमानों के सम्मान जनक रहने का यही मार्ग है कि वह अपनी उपस्थित एवं उपयोगिता प्रमाणित करे और सद्व्यवहार एवं नेतृत्व की इस खाई को पाटने के लिए पूरा करे जो बर्षों से इस देश में चला आ रहा है, इस सिलसिले में मौलाना हिफजुर्रहमान, डा0 सय्यद महमूद और फिर मौलाना अबूल हसन अली नदवी का नाम सर्वसम्मत के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है जिन्होंने विशेष रूप से मानवीय आधारों पर

इस देश के विकास एवं प्रगति के लिए न सिर्फ नेतृत्व का मार्ग एवं लेखों की प्रस्तुति भी प्रदान किये बल्कि विभिन्न संवेदनशील व संकट के दौर में देश एवं मिल्लत के नेतृत्व का बिना राशि के तनमन धन से अपने कर्त्तव्य का पालन किया, अपने जीवन के हसीन व बहुमुल्य समय देश के विकास एकता एवं मज़बूती के लिए न्योछावर कर दिये, जिसका खुला हुआ प्रमाण भारत सरकार की ओर से मौलाना अबुल हसन अली नदवी की सेवा में ''पदम भूषन एर्वाड'' की पेशकश है।

विभिन्न समारोह (सभाएं):

मौलाना अबुल हसन अली नदवी को ईश्वर ने दिले दर्दमन्द, चिन्तनशील एवं दूर दृष्टिता से परिपूर्ण किया था, देश के संकटकालीन दशा और नित्य नई घटनाओं के आप केवल मूकदर्शक तमाशाई न थे, बिगड़े हुए हालात पर आप की आत्मा बेचैन हो जाती थी, लेकिन आप की संवेदनशील भावनाऐ ज्वलनशील होने के स्थान पर तर्क संगत युक्तिपूर्ण, न्यायपूर्ण और चिन्तनशील पर सक्रिय होकर क्रियाशील हो जाया करती थी आपने भड़काऊ भाषा एवं अपशब्दों के बजाए मानवता का संदेश का मार्ग चुना और देश की ग़ैर मुस्लिम बहुसंख्यक को आकृषित करने और इनके मन मास्तिष्क एवं आत्मा को प्रभावित करने के लिए जीवन के विभिन्न समस्याओं, देशहित एवं लाभ के लिए और मानवीय मूल्यों को विषय बनाया, निर्वाचित एवं सभ्य बुद्धिजीवियों से सम्बन्ध एवं मुलाकात का सिलसिला शुरू किया, धार्मिक घृणा की सुलगती हुई आग को ठंडा करने की कोशिश की।

दिनांक 9 जनवरी सन् 1954 ई0 को मौलाना अबूल हसन अली नदवी ने एक मुहिम और एक मिशन के तहत ''मखलूता इज्तमाअत'' मानवता का संदेश का शुभारम्भ किया, गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल (लखनऊ) में प्रारंभिक सभा हुई जिसमें शहर के सम्मानित गणमान्य और ग़ैर मुस्लिम शिक्षित व्यक्तियों की अच्छी खासी संख्या में सम्मिलित हुए, इसके बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों के दौरे शुरू हुए और मानवता के विभिन्न पहलुओं पर भाषण हुए, इन भाषणों के स्वभाव, उद्देश्य और नजाकत का अनुमान इनके केन्द्रिये विषयों से लगाया जा सकता है, उदाहरण के तौर परः

1– खराबी की जड़ यह है कि बुराई और पाप की इच्छा पैदा हो गई है।

2– आज दुनिया पर स्वार्थ और अनैतिकता और दुर्व्यवहार का मानसून छाया हुआ है।

3– मानव स्वार्थपरस्त भी है और ईश्वर का अवज्ञाकारी भी।

4– उच्च आचरण की नैतिकता एवं सम्मान दिल के अन्दर खोई हुई हैं और इनकी तलाश बाहर है।

प्रत्येक भाषण का अन्त ऐसे विषयों पर होता था जिसे आकाशीय उपदेशों की जरूरत, नबूवत का सम्मान और इसकी अंतिम अवस्था इस्लाम की इच्छा, जिज्ञासा और तलाश पैदा हो।

इन भाषणों के बड़े गहरे और व्यापक प्रभाव पूर्ण हो रहे थे अगर यह सिलसिला आवशयक सावधानी के साथ जारी रहता और ईश्वर की कृपा शामिल रहती तो न सिर्फ इस्लाम और मुसलमानों की

बड़ी सेवाएं प्राप्ति होती बल्कि इस देश के पेचीदा एवं कठिन समस्याओं के समाधान की सम्भावनाएं पैदा हो जाती, लेकिन स्वर्गीय मौलाना के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों और देश–विदेश की यात्रा एवं व्यस्ता के कारण से यह सिलसिला रुक गया।

दंगों की लहरः

भारत विभाजन के पश्चान इस देश में जो संघर्ष और संकट का वातावरण पैदा हुआ इनमें सबसे अधिक चिन्तनीय फसादात का सिलसिला था, जहां प्रत्येक दंगा अपनी विभिन्नता के साथ एक प्रश्नवाचक चिन्ह लिए हुए था, सन् 1963 ई0 और सन् 1964 ई0 के अन्त में दंगों का यह सिलसिला शुरू हुआ कि जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया, कलकत्ता, जमशेदपूर, रांची, राऊल केला इन दंगों के प्रभाव में आये, यह बड़े बड़े व्यापारिक शहर थे जहां मुसलमानों को बेदर्दी के साथ हत्या कर दी गई, स्त्रियों के साथ दृरव्यवहार किया गया और हर तरह की घृणा एवं आपत्तिजनक कार्य किये गये, दंगे तो इन विशेष शहरों में हुए लेकिन यह पूरे देश के लिए संकट का सायरन था प्रत्येक हिन्दुस्तानी और राष्ट्रप्रेमी के लिए एक बड़ी चिन्तनीय एवं गम्भीर बात थी, विशेषकर विद्वानों ने इन दंगों की चोट को अपने दिलों में महसूस किया।

मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के एक समूह के साथ दंगों के इन स्थानों का दौरा किया, विभिन्न लोगों से भेंट की, हालात की गम्भीरता को महसूस किया और इस परिणाम

पर पहुंचे कि अब भी देश के बहुसंख्यक समूहों में एक ऐसा बड़ा समूह ऐसा मौजूद है जिसकी मानसिकता मैली नहीं हुई और जो देश की सुरक्षा और सम्मान के लिए चिन्तनशील हैं, अर्थात मौलाना ने यह कोशिश की कि हालात के सुधार और दंगों को रोकने के लिए बहुसंख्यक समूहों को ही कुछ सम्मानीय और नवयुवक को सामने लाया जाये और फिर इस उपयोगी एवं कल्याणकारी कार्य के लिए देश की दो महत्त्वपूर्ण सक्रिय व्यक्तियों जय प्रकाश नरायण और बिनोवा भावे का चुनाव किया, इनसे भेंट की, संवाद एवं वार्ता की कोशिश कीं, दंगों की गम्भीरता, देश की तबाही और पेचीदा प्रभावी फैसले सूरते हाल की तरफ ध्यान भी किया, लेकिन अफसोस की हालात के मांगों को वह अच्छी तरह समझ न सके और दो क़दम भी साथ चलने को तैयार न हुए इन लोगों के असहयोग व्यवहार से मौलाना को असहनीय पीड़ा हुई होगी, लेकिन देश व क़ौम के प्रेम व तड़प ने आप को टूटने न दिया और हालात के सामने बेबस होने के बजाए अपने स्वयं मुसलमानों को यह सद्आचरण करने और लोगों का नेतृत्व की ज़िम्मेदारी स्वीकार करने की दावत दी और अपने सहयोगी चिन्तन व अपने स्वभाव वाले मौलाना अबुल लैस नदवी (अमीर जमाअते इस्लामी हिन्द) मुफ़्ति अतीक़ुर्रहमान उस्मानी,, डा0 सैय्यद महमूद, डा0 अब्दुल जलील फरीदी इत्यादि जैसे विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों की इस अनुभव में सम्मिलित किया और ''मुस्लिम मजलिस मुशावरत'' के शीर्षक से हिन्दु मुस्लिम एकता की कोशिश शुरू कीं।

मुशावरत के तहत विद्वानों व बुद्धिजीवियों की एक कमेटी

बनाई गयी, जिसने देश के विभिन्न क्षेत्रों के दौरे किये, रांची, चक्रधरपूर, चाईवासा, जमशेदपूर इत्यादि जैसे शहरों में कमेटी का पुरजोश स्वागत किया गया, प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे विशाल जल्से (सभा) सम्पन्न किये गये कि ख़िलाफ़त आन्दोलन की याद ताज़ा हो गयी, हिन्दू मुस्लिम एकता के ऐसे दृश्य सामने आये जिसकी कोई आशा भविष्य में कठिन लगती है, मुसलमानों के सम्बन्ध में ग़ैर मुस्लिमों के एक समूह का मन मस्तिष्क साफ हुआ और विश्वास का वातावरण फैलना शुरू हई।

मानवता के संदेश का आन्दोलनः

विभिन्न सभाओं और मुशावरत के सभा ने प्रत्येक समूह को अपनी ओर आकृषित किया, हिन्दू –मुस्लिम एकता की आवाज को राष्ट्रव्यापी बना दिया, परस्पर प्रेम, स्नेह का वातावरण स्थापित होने लगा, मानवता के सूखे ओठों को सन्तोष और दिल को उत्साह का समान प्राप्त होने लगा। सन् 1956 ई0 तक मानवता के निर्माण का यह कारवां राष्ट्र के विशेष व साधारण दिलों में प्रवेश होता रहा, कुछ समय पश्चात मौलाना मरहूम की व्यस्तता, प्रकाशन एवं प्रसारण एवं लेखों की संलिप्ता एवं यात्राओं के कारण यह कार्य मध्यम पड़ गया, लेकिन मौलाना को इसके लाभ व आवश्यकता का बड़ा एहसास था, इनके विचार में जो बड़ी दूरदर्शिता और उपायों पर आधारित था कि इतने बड़े विशाल देश में जिसमें बहुसंख्या ग़ैरों की हो, इनको नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता था और विशेषरूप से ऐसे वातावरण में जहां

नासमझी, बदगुमानियां बढ़ रहीं हो, राजनैतिक मोर्चा बन्दी हो रही हों और बहुसंख्यकों के समूहों में अल्पसंख्यक के विषय में तो भ्रम घृणा पैदा किया जा रहा हो, मूकदर्शक बनकर रहना बड़े खतरे का झोंका बन सकता था अर्थात इस भावना के तहत मौलाना ने इस विषय को फिर से जारी रखने का निर्णय किया दिनांक 28,29,30 दिसम्बर सन् 1964 ई0 को इलाहाबाद में इस विषय पर एक बड़ी कान्फ्रेन्स की घोषणा की और इन शब्दों के साथ मानवता का संदेश भी राष्ट्रीय स्तर पर मुहिम की शुरूआत कर दिया गया। ''अफसोस है कि इस लम्बे चौड़े विशाल देश में आचरण की कमजोरियों को दूर करने और आत्मिक और मानव जीवन को रिवाज देने के लिए कोई आन्दोलन और कोई संगठन नज़र नहीं आती, हमने बहुत प्रतीक्षा किया और अन्त में यह निर्णय किया कि जो कुछ बन पड़े इसकी शुरूआत कर दें।''

मानवता का संदेश की इस कान्फ्रेन्स ने बहुत से सोये हुए आत्मा को झिंझोड़ दिया, और नसों में ठण्ड़े होते खून को गरमा दिया, हिन्दू मुस्लिम पक्षकारों एवं बुद्धिजीवियों ने मानवता का सन्देश की इस सोच की सहमति प्रदान की और इसका भव्य स्वागत किया और यहीं से मानता का सन्देश का वह कारवां नियमाकुल एक आन्दोलन की शक्ल में गतिमान हो गया।

कारवाने मानवता के इन कारवां ने लोगों में एकता और समानता की आवाज़ बुलन्द की, देश के अनेक प्रदेशों और बड़े–बड़े शहरों मे मानवता की आवाज बुलन्द हुआ, बिहार, मध्य प्रदेश, हरियाणा राजस्थान, पंजाब, चण्डीगढ़ और यू0पी0 के विभिन्न ज़िलों में मानवता

का सन्देश के सभा संम्पन्न हुए जिनमें बड़ी संख्या में हिन्दु, सिख, जैनी और अन्य स्थानों की जनता के साथ इनके महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सन्देश मानवता की सभा जिन स्थानों में होते इनमें विशालता और व्यापकता होती जो एक तरफ इस सन्देह की विशालता व संगठनात्मक और मानवता की आत्मा पर प्रमाणित करती तो दूसरी तरफ इस बात का प्रमाण भी थीं कि अभी इस देश का आत्मसम्मान मुर्दा नहीं हुआ है, अभी मायूस होने का काई कारण नहीं, अभी इसमें सहृदयता सजन्नता के गुण मौजूद हैं और प्रत्येक समूह में सच्चई की प्यास और अच्छी बात की भी महत्ता पाई जाती है। यह सभा जहां मस्जिद व मदारिस में होते वहीं स्कूलों कालेजों में भी, जहां बड़े मैदानों और बड़े हालों में होते वही युनिवर्सिटी कैम्पों और बार एसोसिएशन में भी।

मानवता के सन्देश के सभाओं और दौरों से देश का वातावरण पर गहरा प्रभाव पड़ा, न्यायप्रिय ग़ैर–मुस्लिमों और बुद्धिजीवियों में इस्लाम के आकाशीय सन्देश के अध्ययन करने की भावना पैदा हुई, मुसलमानों से लाभाविन्त होने की भावना पैदा हुई और मुसलमानों को स्वतन्त्र वातावरण में काम करने का अवसर मिला, मानवीय संकट, आचरणीय भेद भव, जान व माल की रक्षा और स्वार्थी और दौलतपरस्ती के जिस मैदान में हिन्दुस्तान तीव्र गति से बढ़ रहा था इस पर कुछ रोक लगी और कुछ न्यायप्रिय एवं जीवित आत्मसम्मान हिन्दुओं ने यहां तक कहा कि आज मालूम हुआ कि इस देश को

बचाने की चिन्ता मुसलमानों को हमसे अधिक है।

इन सभाओं में सामान्यरूप से आन्दोलन के अगवा मौलाना अबुल हसन अली नदवी का ही होता था इनके भाषणों में सद्आचरण का नेतृत्व मानसिक और आत्मसम्मान की जागृति, देश व क़ौम के कल्याण और सद्आचरण, मानवता की सेवा पर खुलकर वार्तालाप होती थी, और मौलाना की प्रत्येक भाषण ''आज दिल ख़ैर व बरदिल रेज़'' का सारांश होती थी, इसका अनुमान इन कुछ शीर्षकों से जाना जा सकता है जो इन भाषणों के विषय रहे हैं

☆ इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

☆ जब पढ़े–लिखे इन्सान पर हिस्ट्रिया का दौरा पड़ता है।

☆ इस दुनिया में आने वाले इन्सान चमन के कांटे या फूल।

☆ देश की वास्तविक समस्या इसके लिए वास्तविक ख़तरा।

☆ देश की आज़ादी का सही मतलब और लाभ।

मौलाना अबुल हसन अली नदवी का यह सन्देश न नग्मे बग़ावत था न राजनैतिक व क्रान्तिकारी नारा या समयानुकुल जोशिला प्रोपेगेन्डा, बल्कि यह सुधारात्मक संदेश, दर्द की आवाज़ और सद्आचरण एवं सत्यप्रेम का मिशन था और यह भावना थी कि हिन्दुस्तानी समाज जो तेजी से मानवता की हत्या, धार्मिक घृणा, क्षेत्रवाद का शैक और विभिन्न नैतिकता व आचरण के पतन का शिकार है इसके सुधार की चिन्ता की जाये, इस देश को घृणित मानसिकता और दुव्यवहार से बचाया जाये और सद्आचरण और मानवता को उच्च आधारों पर समाज का नवनिमार्ण किया जाये।

यह आन्दोलन इस दृष्टिकोण से भी श्रेष्ठ और भिन्न थी कि यह साधारण आन्दोलन और विचारों की तहर न कोई राजनैतिक संगठन थी और न इसमें व्यक्तिगत लाभ की भावना थी। बल्कि देश और मिल्लत के अर्न्तगत आचरण व समाजी ज़िम्मेदारी का पाठ था, इस स्तर से किये गये उद्घोषणा सच्ची राष्ट्रीय प्रेम, मानव स्नेह और परस्पर प्रेम व एकता की व्याख्या थी यह टूटे दिलो की वह आवाज थी जिसकी गुंज देश के कोने–कोने में सुनी गई, यह मानवता के वह गीत थे जो देश वासियों के हृदय व मनमस्तिष्क को हमेशा झिकझोरते रहेंगे और इनके जीवन को कल्यानकारी व सफलता की वास्तविकता से प्रकाशित कराते रहेंगे। सच्ची बात तो यह है कि मानव को मानव से जोड़ने की आधारभूत प्रयत्नों में आन्दोलन मानवता का सन्देश का चरित्र एतिहासिक भी है और इतिहास निर्माण भी।

मनुष्य की एकता न कि धर्मों की एकताः

संदेश मानवता वास्तव में मानव मूल्यों और मानव अधिकारों के आधार पर एक कोशिश है, यह काम जितना ज़रूरी है उतना ही नाज़ुक और संवेदनशील भी है मनुष्य की एकता की यह कोशिश जरा सी उदासीनता में एकता के क्षेत्रों तक पहुंच सकती है। इसी लिए इस मैदान का व्यापक विषय सद्आचरण, शिष्टाचार, ईशसमपर्ण, मानव मित्रता और सदाचार की दावत रही है, किसी भी दृष्टिकोण से धर्म की दावत या धार्मिक सन्देश को विषय नहीं बनाया गया, यही कारण है कि आन्दोलन मानवता का सन्देश में अगरचे विद्वानों एवं बृद्धिजीवियों

की एक बड़ी जमाअत शामिल थी लेकिन इस कार्य की संवेदनशीतला व नज़ाकत के पेशेनज़र इसके संस्थापक मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने इस मंच से प्रत्येक जनसाधारण एवं बुद्धिजीवियों को सम्बोधन की आज्ञा नहीं दी, बल्कि उन विशेष व्यक्तियों को ही यह ज़िम्मेदारी सुपुर्द की, जो वहदत इन्सान और वहदत अदयान के मध्य नाज़ुक अन्तर से अच्छी तरह परिचित थे, अर्थात मौलाना मुहम्मद हसन, मौलाना इसहाक जलिस नदवी, मौलाना अब्दुल करीम पारेख, क़ाज़ी अब्दुल हमीद इन्दौरी, प्रोफेसर अनीस चिश्ती, मौलाना अब्दुल्लाह हुसनी नदवी जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने मानवता का सन्देश के अधिवक्ता थे, यही इस विषय पर सम्बोधन करते या विषय को लिपिवद्ध करते।

स्पष्ट रहे कि मानवता अगरचे दुनिया के सभी धर्मो की एक जूट विरासत है लेकिन इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म को सच स्वीकार करना इस्लामी आत्मा के सख़्त प्रतिकूल है। इसी लिए धर्म का नाम लिए बग़ैर सम्मिलित रूप से वार्तालाप एवं संवाद होनी चाहिए ताकि धर्म के सम्मान और वास्तविकता के विषय पर नूरा कुश्ती की नौबत न आये, और ग़ैर मुस्लिमों के मन व आत्मा तक पहुंचने के रास्ते में रुकावट न बने, इस बात कि बिल्कुल गुंजाईश नहीं कि मुसलमान मानवता के नाम पर ग़ैरों का धार्मिक तरीक़ा या उनकी छाप अपना लें, इसलिए कठोरता के साथ धार्मिक त्योहारों में सम्मिलित होने या सम्मिलित करने से असहयोग करना होगा, ईद मिलन और होली मिलन जैसे कार्यक्रमों की राजनैतिक समाधान तो हो सकती है लेकिन संदेश मानवता के बैनर तले यह ख़तरे का सायरन है।

शपथ का आधुनिक अर्थः

मानवता का संदेश का आन्दोलन जब सम्पूर्ण देश में सक्रिय रूप से गतिशील हुआ और अपने उद्देश्यों एवं विषय के आधार पर जन साधारण में स्थान पाने लगा तो कुछ समूहों संगठनों को इससे तनाव होने की सम्भावना भी पैदा हुआ, जो एक स्वभाविक तत्त्व या क्रिया थी, अर्थात कुछ क्षेत्रों से यह आवाज़ें उठने लगी कि यह आन्दोलन अन्य इस्लामी दावत व सेवाओं में रुकावट बन सकती है, और यह विचार भी प्रस्नुत किया गया यह आन्दोलन दावते इस्लामी की आत्मा के प्रतिकूल है।

यह वह सम्भावना थी जो मौलाना अबूल हसन नदवी के अनुसार ''मैं इसको अन्देशा दूर दराज से ज्यादा वक़अत नहीं देता''। क्योंकि इस आन्दोलन के सम्मुख बिना भेदभाव धर्म व मिल्लत देश के समस्त निवासी थे, और इसकी वास्तविक उद्देश्य देश में शान्ति एवं सौहार्द स्थापित करना और ऐसी अनुकूल परिस्थितियां तैयार करना था जिसमें मुसलमानों की अन्य संगठनों को शान्ति एवं सन्तोष के साथ अपना काम कर सकें और संगठन एवं समूह के कार्यक्रम सुरक्षित रह सके, इस लिहाज से यह आन्दोलन देश की प्रत्येक आन्दोलन के सेवक एक सहयोगी की तरह थी, यही कारण है कि मौलाना ने इस आन्दोलन में उन लोगों को शामिल करने में उचित नहीं समझा जो अन्य धार्मिक एवं मिल्ली सेवाओं से सम्बंधित थे।

जहां तक इस आन्दोलन के इस्लामी भावना के प्रतिकूल होने

की बात है तो इसकी आधारभूत कारण ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) के सद्‌चरित्र एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सही जानकारी है। ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) के काल में भी इन्ही उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं के अन्तर्गत एक आन्दोलन उठी थी जिसे इतिहास ने ''हलफुल फुजुल'' के नाम से सुरक्षित कर रखा है, इस आन्दोलन के उद्देश्य कुछ इस तरह थेः

☆ किसी भी समूह व संगठन से भेद–भाव के बग़ैर हम निर्बलों का साथ देंगे इनको इनका अधिकार दिलाएंगे।

☆ देश में हर तरह की शान्ति एवं सौहार्द स्थापित करेंगे।

☆ यात्रियों की सुरक्षा करेंगे।

☆ निर्धनों की सहायता करेंगे।

☆ किसी अत्याचारी या गुंडा एवं असमाजिक तत्वों को नहीं रहने दिया जायेगा।

कुरैश और बनू कैश के मध्य लम्बे समय तक युद्ध जारी रही जिसे ''जंग फजार'' कहा जाता है, इस जंग ने दोनों पक्षों की भी कमर तोड़ दी थी, जान–माल के नुक़सान ने ज़मीन से लगा दिया था, इसलिए सुलह करना और शान्ति व सौहार्द को स्थापित करना दोनों के लिए जरूरी था, इसी उद्देश्य के अन्तर्गत यह समझौता हुआ जिसमें ईशूदत मुहम्मद (सल्ल0) सम्मिलित हुए, और हिजरत (पलायन) के बाद एक अवसर पर इसका वर्णन करते हुए कहा कि आज भी अगर कोई ऐसा अनुबन्धन का निमन्त्रण दे तो मैं इसके लिए तैयार हूं।

यह अनुबन्धन मक्का की उस परिस्थिति में हुआ था जहां

मुसलमानों पर वर्षों से परेशान किया जा रहा था इनके जीवन को खिलवाड बना दी गई थीं, इनके उधोग धन्धे नष्ट किये जा रहे थे, रास्ता चलना कठिन कर दिया गया था, सामूहिक हमलों (Mob Linching) की घटनाएं अधिकता से होने लगी थीं, संक्षेप में मुसलमान शहर मक्का में दूसरे बल्कि तीसरे दर्जे के नागरिक बना दिये गये थे, ऐसी दशा में ईश्वर के ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) का हलफूल फजूल अनुबन्धन में सम्मिलित होना इस बात का प्रमाण है कि परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल या ख़राब हो जायें अत्याचार की सीमाए कितनी भी पड़ जायें प्रत्येक समाज में ऐसे व्यक्ति ज़रूर होते हैं जिनका आत्मसम्मान जिन्दा होता है, जो अत्याचार को अत्याचार समझते हैं और समाज में शान्ति एवं चैन के इच्छुक होते हैं।

आज हमारे देश की परिस्थितियां मक्की दौर से बहुत समानता रखती हैं, अत्याचार और दुःख की घटनाएं हैं, मिल्ली कार्यक्रमों पर रोक है, समाजिक व आर्थिक स्तर पर तबाही की साजिशें हैं, मुसलमानों से नागरिकता छीनने की कोशिश हो रही है धार्मिक एवं मिल्ली कार्यकत्ताओं को परेशान किया जा रहा है अर्थात पच्चीस करोड़ मुसलमानों का अस्तित्त्व ख़तरे में है, फिर भी ग़ैर मुस्लिमों में एक बड़ी संख्या ऐसी भी हैं जो न्यायप्रिय, शान्तिप्रिय और मानवता प्रेमी एवं राष्ट्रभक्त भी है। जो देश की स्थिति को सुधारने एवं देश का विकास करने में प्रयत्नशील हैं, लेकिन इसे कोई संगठित मंच प्राप्त नहीं है, ऐसी परिस्थितियों में हलफूल फजूल (शपथ समझौता) की जरूरत एवं महत्ता बड़ती जाती है, और इसी शपथ समझौते (हलफूल

फजूल) की एक व्यवहारिक रूप मानवता का संदेश की कोशिश हैं।

मानवता सन्देश का उद्देश्यः

दुनिया की संरचना का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर की कृध्यन्ता उसकी विशेषता और गुणों का आभारी होना है और उसकी ओर पलटकर जाना है, और यह उसी समय संभव है जब तक समस्त मानव जाति को बुराईयों और गंदगियों से शुद्ध करके भलाई, विशेष गुणों से सुसज्जित किया जाये और यह ज़िम्मेदारी मुस्लिम भाईयों के सुपुर्द की गयी।

मुसलमानों का विस्तार वास्तव में नबी मुहम्मद (सल्ल0) की रिसालत का फैलाव है, इसीलिए मानवीय आचरण व गुण की प्रचार–प्रसार की बागडोर इनके हाथों में दे दी गई है, और इनके सामने यह पवित्र कुरआन के नियम वर्णित कर दिया गया।

> तुम सर्वश्रेठ उम्मत हो जिसे लोगों के लिए बरपा किया गया है, तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो।

इस आयत के आवलोक में भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना मानवता का सन्देश की वास्तविक पहचान और सार है। अर्थात इसे विस्तृतरूप में निम्मलिखित शीर्षकों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैः

☆ धर्म के नाम पर स्थापित गइराई को मानवीय आधारों के द्वारा

पाटने का प्रयत्न करना।

☆ केवल मानवीय आधारों पर देश में भलाई, भाईचारे का वातावरण स्थापित करना।

☆ नैतिक पतन, दुराचार को समाप्त करके सुनियोजित एवं साफ सुथरे समाज का निर्माण करना।

☆ मानव सेवा के द्वारा निर्बल एवं असहाय इन्सानों को वास्तविक आनन्द से परिचित करना।

☆ समाज में प्रचलित भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक्ता, जमाखोरी, आर्थिक शोषण और अव्यवस्था पर कठोरता के साथ रोक लगाना।

☆ अश्लील एवं अर्ध्दनग्न और समाजिक शोषण के विरुद्ध पूर्णरूप से संर्घष करना।

☆ ज़ालिमाना रीति–रिवाज में बदलाव की कोशिश।

☆ कमज़ोर शोषित बेसहारा एवं भूखे नंगे निर्धन व्यक्तियों की हर संभव सहायता करना।

☆ नवयुवकों में अध्ययन एवं अध्यापन की गम्भीरता, उद्देश्यपूर्ण और समाजी सेवा की भावना पैदा करना।

मानवता का संदेश की आवश्यकता इन्ही आधारों पर स्थापित हैं जिन आधारों पर शपथ– अनुबन्धन (हलफ फजूल) का मुआहदा हुआ था। अर्थात परिस्थिति की मांग और आचरण व समाजिक बुराईयों के विभिन्नता के कारण से इसका आकार विस्तृत होना असहनीय था।

बुराई से रोकना और भलाई का आदेश देना के आवलोक में मानवता का सन्देश का आकार असीमित है, आवश्यकतानुसर यह

बढ़ता और सिकुड़ता रहेगा, इसे किसी भी तरह सीमित करना मानव वुद्धि के बाहर का काम है, इस मैदान के व्यक्ति स्वयं ही इस सीमा की समझकर प्रभावी तरीक़े से अपना सकते हैं।

नियम एवं व्यवस्थाः

मानवता के सन्देश का कार्य वास्तव में इस्लामी शिक्षाओं को व्यवहारिक कार्य रूप देना है, अपने जीवन को इसी में ढालना और समाज में ऐसा चित्रण प्रस्तुत करना है जिसकी तरफ शताब्दियों से ध्यान नहीं दी जी सकी। यह मुसलमानों की गम्भीर उदासीनता ही है कि दावते इस्लाम का काम जिस स्तर पर करना चाहिए था उन्होंने ऐसा नहीं किया, अपने आप को मदरसों एवं मस्जिदों की चारदिवारियों में क़ैद कर लिया, शादी ब्याह और कुछ विशेष समस्याओं में स्वयं को सीमित कर लिया, और जीवन के धारे से स्वयं को अलग–अलग कर लिया, परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है कि वह अपनी मस्जिदों और इबादतगाहों में किसी सीमा तक मुसलमान अवश्य हैं लेकिन जब ग़ैरों से वास्ता पड़ता है तो इस्लाम की महान शिक्षा का साधारण सा भाग भी नज़र नहीं आता, बल्कि कभी–कभी वह काफिरों मुश्रिक क़ौमों से भी गये गुजरे नजर आते हैं।

परिस्थिति का विश्लेषण बताता है कि नैतिकता एवं आचरण की गिरावट, मामलात की खराबी, बेईमानी, गबन, चोरी, बलात्कार एवं शराब ख़ोरी यहां तक कि हत्या व गारतगीरी जैसी आमानवीय कामों में भी मुसलमान किसी से पीछे नहीं हैं। ऐसे दसियों घटनाएं प्रस्तुत

की जा सकती हैं जिन में मुसलमानों ने इस्लाम को शर्मसार किया है।

इस देश में इस्लाम की प्रतिकूल तस्वीर पेश की गई है इसी का परिणाम है कि देश का बहुसंख्यक समूह आज मुसलमानों से परेशान और अलग है, वह नही चाहता कि मुसलमान इस देश में अपने मिल्ली विशेषताओं और महानता के साथ बाक़ी रहें। बल्कि अन्य जातियों की तरह वह भी यहां के राष्ट्रीय धारे में समाहित हों जायें, इसके अतिरिक्त शासन की नीतियां भी खुलकर कहती हैं कि इस देश को दूसरा स्पेन बनाने का पूरा खाका तैयार किया जा चुका है, और खाक़ों में रंग बिखरने का काम भी शुरू हो चुका है।

देश की वर्तमान परिस्थितियां आये दिन जहरीली होती जा रही है, भेदभाव दुर्भावना, घृणा की तेज हवाएं इस चमन को झुलसाने लगी हैं, यहां की एकता एवं धम्र की प्रचुरता और इस अधिकता में इंसानी एकता की कल्पना अब विलुप्त होता जा रहा है। अभी तक इस देश की आधारशीला लोकतन्त्र, आपसी भाईचारा और धर्म निरपेक्ष के नाम पर स्थापित थीं, लेकिन यह आधारशिला सीमित हो चुकी हैं, हिन्दू मुस्लिम एकता की दास्तानों को न केवल मन से बल्कि पुस्तकों से भी खुरच फेंकने की कोशिशें जारी हैं, धार्मिक उन्मान्द ने मानवीय मुल्यों को खामोश कर दिया है, देश की व्यापार तबाह हो रही है, जीवन का प्रबन्धन पूरी तरह बिगाड़ चुका है रास्ते पर मान सम्मान असुरक्षित हैं लेकिन बहुसंख्यक समूह ने यह सब इस लिए स्वीकार कर रखा है कि इन दशाओं का प्रभाव मुसलमानों के अस्तित्व पर पड़ रहा है, इनका उत्साह टूट रहा है, और संभावना यह है कि कुछ वर्षों बाद इनका

अस्तित्व ही समाप्त हो जाये या अपनी पहचान को विलुप्त करके वह भी यहां की देवमालायी सभ्यता का भाग बन जायें। यहां यह बात भी स्पष्ट रहे कि कुटिल कूटनीतिक मानसिकता रखने वाले समस्त राष्ट्रीय नागरिक नहीं हैं, ऐसी मानसिकता रखने वाली एक सीमित संख्या है जो आज़ादी के बाद से सक्रिय है, यद्यपि वर्तमान परिस्थितियों में यह है कि वर्तमान सरकार पर ऐसे ही व्यक्तियों की अधिकता है, इसलिए मुस्लिम दुशमन मानसिकता में वृद्धि होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

परिस्थितियों की गंभीरता इस बात की बिल्कुल आज्ञा नहीं देती की मुसलमान एक सुरक्षात्मक दशा स्वीकार कर लें और आंधियों, तुफानों के सामने एक दिवार बना कर स्वयं को सुरक्षित कर लें, क्योंकि परिस्थितियां बता रही हैं कि जब यह आंधियां तेज होंगी और तुफान बलाखेज़ होगा तब यह दिवार रेत की तरह उड़ जायेगा, इस लिए आवश्यकता दीवर बनाने की नहीं है बल्कि आंधियों को रोकने और तुफान को थामने की है, और यह उसी समय संभव होगा जब मुसलमान अपने विवेक एवं योग्यता के साथ जीवन के धारे में घुसने की बल्कि इसको अपने हाथ में लेने की कोशिश करेंगें।

अवशिष्ट लाभ का नियमः

ईश्वर ने इस दुनिया में जो व्यवस्था जारी की है जिसको दुनिया ने भी स्वीकार किया है वह अतिरेक लाभ अर्थात अवशिष्ट लाभ का निस्वार्थ क़ानून है, जिस वस्तु में कोई लाभ या इंसान की बकाए

नशों नुमा उसकी राहत और विकास का कोई सहयोग नहीं वह वस्तु बहुत शीघ्र अपना अस्तित्व खो देती है पवित्र क़ुरआन ने इस वास्तविकता को ''जबद'' (झांग) के शब्द से सम्बोधित किया है।

> जहां तक झांग का सम्बन्ध है सो वह बेकार चला जाता है, और जो वस्तु लोगों के लिए लाभदायक होती हैवह पृथ्वी में ठहर जाती है। (अल राअदः 18)

अवशेष का क़ानून अन्य क़ानूनों की तरह मुसलमानों के साथ भी विशेष है, मुसलमान इस खुदाई क़ानून से मुक्त नहीं, इसी तरह यह क़ानून अपनी शर्तों एवं परिणाम के साथ देश हिन्दुस्तान में भी लागू है।

अगर मुसलमान इस देश में धार्मिक आज़ादी के साथ रहने का अधिकार चाहता है तो उन्हें अपनी राष्ट्रभक्त को प्रमाणि करना होगा यानी इनको अपनी उपयोगिता का प्रमााण देना होगा कि जीवन की कोई आवश्यकता है जो इनके बग़ैर पूरी नहीं हो सकती, वह अध्यात्मिकता, सदाचार और मानव सेवा के ऐसे किनारे पर खड़ा है कि अगर इन्हे इस मोर्चे से हटा दिया गया तो ज़िन्दगी में ऐसी खाई स्थापित होगी जिसको बड़ी बड़ी सरकारें भी नहीं पाट सकतीं। आज का युग जिस भाषा को समझाता है और जिसका सम्मान करता है वह लाभ की और ज़िन्दगी के अधिकार की भाषा है।

अब तक मुसलमानों ने अपनी लाभदायक एवं उपयोगिता का

प्रमाण दिया तब तक पूरी दुनिया ने इनके अस्तित्व को अपने लिए जरूरी समझा। ऐसी दसियों उदाहरण मौजूद हैं कि लोगों ने मुसलमानों को पड़ोसी होने का सौभाग्य समझा।

हज़रत अब्बदुल्लाह बिन मुबारक के विषय में मशहूर है कि इनका पड़ोसी एक यहूदी व्यक्ति था, जब उसने अपना मकान बेचना चाहा तो इसका मूल्य दो हजार दिनार तय की, एक व्यक्ति ने कहा कि इस क्षेत्र में ऐसी मकान की क़ीमत ज़्यादा से ज़्यादा एक हज़ार दिनार होनी चाहिए, उस यहूदी ने जवाब दिया कि घर की क़ीमत एक हज़ार ही है और एक हज़ार अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पड़ोस की है। निः स्वार्थ आज भी अवशेष लाभ का, क़ानून इसी तरह लागू है और दुनिया इसी को स्वीकार करती है, इसलिए दो टूक बात वही है कि इस देश में मुसलमानों की उपयोगिता का एक ही रास्ता है कि वह अपनी लाभदायकता को प्रमाणित करें, और यह विश्वास दिलाये कि अगर इनका अस्तित्व नहीं रहा तो देश में एक ऐसा खलीज (खाई) पैदा हो जायेगा जो कोई और पूरा नहीं कर सकता।

मुसलमान सिर्फ इसलिए बाक़ी नहीं रह सकते कि वह यहां सदियों से आबाद हैं भविष्य में इनके अनेकों बलिदान और कारनामे हैं इनकी यादगारें स्थापित हैं, इस देश की आज़ादी में इनका बड़ा हिस्सा है या यह कि फलां–फलां युग में और फलां–फलांः सरकार में इनको विशेष छूट प्राप्त रही है और यह वह क़ानून है जिसमें दया की प्रार्थना न कभी सुनी गयी और न कभी सुनी जायेगी।

दावती भावनाः

मुसलमानों के अधिकार में बक़ाए नफा (अवशेष का लाभ) का क़ानून इनकी दीनी एवं दावती भावना से जुड़ी हुई है, और यही भावना मिल्लत की सारी क्रियाओं कार्यक्रम और प्रयासों का आधार हैं, जब तक ग़ैर मुस्लिमों के मन को साफ करने, इनको अपने श्रेष्ठ आचरण एवं व्यवहार से प्रभावित करने, इनसे मामलात संवारने, मेल–मिलाप करने, शिष्टाचार का उदाहरण प्रस्तुत करने और इन पर प्रभाव डालने की भावना नहीं होगी, और इनको अपने अस्तित्व की आवश्यकता का एहसास नहीं दिलाया जायेगा किसी भी तरह की मिल्ली व राष्ट्रीय कार्यक्रम लाभदायक सिद्ध नहीं होगी।

दावती भावना में ईश्वर ने बहुत ही प्रभाव व स्नेह प्रियता रखी है, यही भावना मुसलमानों के अस्तित्व को बाक़ी और इनके प्रगति और विकास का प्रमाण है इसी भावना ने इनको न्युनता में अधिकता पर और बग़ैर सामग्री में साधन एवं माध्यम की वृद्धि पर गलबा दिलाया है, इसी भावना ने बागी समूह को व्यवस्थित किया, हठधर्मी को दयालु किया और कठोर दिलों को भी मोम किया है।

हिन्दुस्तान के इतिहास में मुस्लिम शासक इसी दावती भावना से भरपूर थे, इन्होंने धार्मिक बराबरी की असाधारण प्रयास किये, इस्लामी शिक्षाओं में किसी स्तर तक उपेक्षा सी भी काम लिया, गैरों में शादियां रचाये मोहल्लों मे मन्दिर का निर्माण करवाए, जनता का दिल जीतने की हर सम्भव प्रयास कर डाली लेकिन हजार वर्षों के काल

धार्मिक सहिषुणता, भाईचारा के बावजूद ताज महल के सौन्दर्य, आलीशान मकबरों में सोने वाले आज केवल प्राचीन इमारतों के यादगार हैं, लाल किला का दर्शक रीर्घा, दीवाने आम, दीवाने ख़ास की पेशानी पर जन्नत का टीका देख सकते हैं जो अपने अग्रणीय अकाओं को आवाज दे रहे हैं कि हज़ारों वर्षों के शासन के बाद भी भारत भूमि तुम्हें अपना नहीं बना सकी, आज भी तुम इसके सीने पर एक बोझ हो, और एक आक्रमणकारी, ज़ालिम व सितमगर के नाम से याद किये जाते हो, बल्कि अब तो तुम्हारी रोशन इतिहास पर भी स्याही मलने की योजनाए बनाई जा चुकी हैं।

जबकि दूसरी तरफ हजरत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी, हज़रत मुजद्दीद अलफ सानी, हज़रत निजामुद्दीन औलिया रह0, हज़रत शर्फुद्दीन यहया मुनीरी रह0 जैसे दसियों महान हस्तियां हैं, जिनके हाथों पर लाखों व्यक्ति ने कलमे इस्लाम पढ़ी है, आज इनका नाम सुनते ही कटटर हिन्दु भी सम्मान में सर झूका लेता है, इनके मज़ार पर उपस्थिति होकर कब्रों पर चादरें चढ़ाना, मन्नते मांगना, इनको मुशिकल कुशा एवं हाजत खां समझना एक सामान्य सी बात हो गयी है, घृणा व प्रेम की इसी कसौटी का नाम दावती भावना है, और यही भावना प्रत्येक धार्मिक मिल्ली प्रयासों का आधार है।

व्यवहारिक नमूनाः

मानवता का सन्देश का आधारभूत उद्देश्य ग़ैरों के दिलों तक पहुंचना, मन मस्तिष्क से ग़लत फहमियों को दूर करना है और इस्लाम

की एक ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करना है जिसका वर्णन केवल इतिहास की ज़ीनत बन कर रह गया है।

बहुत ही अफसोस की बात है कि आज मुसलमानों ने जो जीवन विधि को अपना रखा है इसका ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन से कोई जोड़ नज़र नहीं आता जिस तरह की भौतिकतावादी और दुनिया की अभिलाषा में मुसलमान व्यस्त हैं वह किसी भी तरह इनके अस्तित्व की ज़िम्मदारी नहीं है, यही कारण है कि समाज में मुसलमानों के विरुद्ध एक जनसामान्य मानसिक्ता पनप रही है, कुछ मुसलमानों के जीवन विधि, जीवन यापन ने, कुछ मीडिया प्रोपेगंडा (दुषप्रचार) ने और कुछ राजनैतिक लाभ ने यह समझा दिया है कि मुसलमान सिर्फ क़ौम परस्त हैं, इनको अपने मदरसों, मस्जिदों और जमाअतों के सिवा मानवता की समस्या से कोई सरोकार नहीं, देश के निर्माण व विकास से ज़्यादा इन्हें अपने लाभ प्रिय हैं। यह मानसिकता मुसलमानों के लिए किसी बड़े संकट से कम नहीं है।

सिर्फ इस्लाम की महानता और मुसलमानों के लाभ का दावा किसी तरह लाभदायक नहीं, क्योंकि जब तक व्यवहारिक चित्र प्रस्तुत की जायेगी दुनिया यही कहेगी कि ऐसी अच्छी अच्छी बातें तो किताबों में भरी पड़ी हैं, अच्छी बातें करना बहुत सरल है मगर इन बातों पर व्यवहार करना कठिन है। इसी लिए इस मानसिकता को बदलने के लिए सबसे पहले अपने अन्दर परिवर्तन लानी होगी।

मानवता का संदेश से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि इस काम में प्रथम सम्बोधन इसकी अपनी स्वयं की

ज़िम्मेदारी है, सामाजिक विधियां, इसके मामलात और उच्च आचरण ही इसकी मानवता का दर्पण है, जब तक यह अपनी व्यक्तिगत स्तर पर एक आदर्श मुसलमान नहीं बनेगा तब तक वह एक सफल निमन्त्रर्णकत्ता भी नहीं बन सकता और न ही इस्लाम की पक्षकार बन सकता, और दावती भावना के बग़ैर मानवता की कोई भी सेवा लाभप्रद नहीं हो सकती।

प्रशिक्षण प्रबन्धनः

मानवता का सन्देश का काम आसान भी है और संवेदनशील भी, यह दो धारी तलवार है जिसके एक तरफ मानव एकता है और दूसरी तरफ धामिर्क एकता, इन दोनों एकताओं को समझना और इनके मध्य सूक्षम अन्तर को सन्तुलित रखना ज़रूरी है।

इसलिए इस काम में ऐसे विद्वानों को सम्मिलित करना चाहिए जो शरीयत के ज्ञान से परिचित होने के साथ एक ईश्वर व शिर्क की संवेदनशीलता और इसकी बारीकी से अच्छी तरह परिचित हों, धार्मिक एकता पर इनका गहरा अध्ययन हो और विशेषकर विपरित परिस्थितियों में वह षणयन्त्रों एंव चालबाजों को बड़ी गहराई तक समझ रखते हों, संभव है ऐसे विद्धान की संख्या कम हो या अन्य व्यस्ताओं के कारण से वह अपना समय न निकाल सकें, ऐसी दशा में इस समस्या के हल के लिए दो रास्ते अपनाई जा सकती है, एक यह की मदरसों के पाठ्क्रम में व व्यवख्या में धार्मिक एकता और विवेचनाओं को विषय की तरह सम्मिलित किया जाये और छात्रों की मानसिकता

विकसित की जाये, दूसरी दशा यह है कि विभिन्न संगठनों मेंऐसे केन्द्र स्थापित किये जायें जहां इस मैदान में काम करने वालों की मानसिक व वैचारिक प्रशिक्षण की जा सके। केवल यह विचार कर लेना कि धार्मिक विद्धान इस विषय की संवेदनशील हैं और इनसे कोताही नहीं होगी, एक बहुत बड़ी नासमझी होगी ऐसा देखने और सुनने को मिलता है कि मुसलमान मानवीय भावना के तहत ग़ैरों के धार्मिक कामों में सहयोग देते हैं इनकी इबादतगाहों के लिए चन्दे देते हैं और जरूरत पड़ने पर अपना समय भी लगाते हैं, कावड़ के लिए पानी के बूथ लगाने और इनकी मरहम पटटी के काम अत्याधिक होते रहते हैं। इसके अतिरिक्त करोना काल में मुसलमानों ने ग़ैरों के शव को उनके धार्मिक रस्मों के साथ दफन किया, यह काम देखने में प्रशंसनीय लगते हैं लेकिन इस्लामी आत्मा और इसकी शिक्षाओं के अनुमूल नहीं, इसीलिए हिम्मत के साथ ऐसी ग़ैर इस्लामी कार्यक्रमों से मुसलमानों को सचेत करने की अवश्यकता है।

मौलाना अबुल हसन अली नदवी का व्यक्तित्व इस अवस्था से भी विवेचनायोग्य है कि इन्होंने नियोजित तरीके से इस काम की आधार शिला रखी थी, वह इसकी आवश्यकता एवं संवेदनशीलता दोनों से अच्छी तरह परिचित थे उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा भाग मानवता की सेवा में व्यतीत किया है वह इस मार्ग की कठिनाईयों एवं अवरोधों से न सिर्फ परिचित थे बल्कि इसके पथप्रदर्शक भी थे, ईमानी जोश, धार्मिक भावना और स्वयं पर विश्वास एवं भरोसा से परिपूर्ण इनका भाषण आज भी मील का पत्थर की दशा रखता हैं। उस मैदान

में काम करने वालों और विशेष कर मानवता का सन्देश के मंच से उद्घोषणा करने वालों की इनका भाषण के सम्पूर्ण मानव निर्माण , मानवता की मसीहाई से अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

दृढ़ विश्वास पक्का इरादाः

हमारे देश का वातावरण तेजी के साथ नीचे की ओर गिर रहा है अनाचार दुर्व्यवहार एवं राष्ट्रीय एकता तथा सामूहिकता के रुझान में कमी आ रही है, मानव मुल्यों करूणा, क्षमा एवं शिष्टाचार बेदर्दी के साथ नष्ट हो रही है, जान व माल, इज्जत व आबरू का सम्मान तेजी के साथ विदा हो रहा है, मामूली व तुच्छ लाभ के लिए सामूहिक व राष्ट्रीय लाभ को सरलता से बलीदान किया जा रहा है, रिश्वतखोरी, चोर बाज़ारी, भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्था जैसी बुराईयां जीवन को नरक बना दिया है, ऐसी विपरित परिस्थितियों में मानवता का सन्देश सुनना, मानव हमदर्दी की बाते करना, मानव एकता की पुकार लगाना और सोये हुए आत्म सम्मान को झिकझोड़ना सूरज को चिराग़ दिखाने के समान है।

मानवता का संदेश का काम मानव की मसीहाई का काम है घृणा के मौसम में प्रेम का चिराग रोशन के समय है, और इतिहास गवाह है कि जब भी किसी ने समाज सुधार की आवाज उठाई है उतनी ही कठोरता के साथ विरोध किया गया, प्रत्येक क्रान्तिकारी आवाज को दबाने का प्रयास किया गया है, मुर्दा आत्म सम्मान ने कभी यह गवारा नहीं किया कि इनके घरों में मानवता की एक शमा भी

रोशन हो सके। इस लिए यह याद रहे कि शुरूआत में इस काम में क़दम क़दम पर परेशानियाँ कठिनाईयां आ सकती हैं, आजमाईश भी होगी, बदगुमानियां भी बढ़ेंगी, तरह तरह के प्रश्न भी किये जायेंगे, क्योंकि विभिन्न संगठनों, पार्टियों और नेताओं ने जिस तरह प्रभावी भाषणों खुशनुमा शीर्षकों के द्वारा जनता को लूटा है इसके बाद इनका अधिकार है कि वह हर नई आवाज की जांच पड़ताल करें और काम को परखने देखने के बाद विश्वास करें।

लेकिन यह समय आज़माईश वक्ती एवं क्षणिक अस्थाई हैं, दावती भावनाओं के सामने बड़ी बडी रुकावटें रेत से ज़्यादा की हैसियत नहीं रखती, मंजिल निगाहों के सामने हो तो रास्ते की रुकावटों की कोई हैसियत नहीं होती, लगातार मेहनत व मजबूती के साथ क़दम के बाद रास्ते स्वयं ही खुलती चली जायेगी और लोग अपनी जान माल तक न्योछावर कर देंगे।

प्रदर्शन से मनाही:

मानवता का सन्देश की बुनियाद किसी राजनैतिक, कल्याणकारी आन्दोलन या जमाअत की चिन्तन या विचारधारा की तरफ नहीं है बल्कि इसका सम्बंध दर्दो–तड़प, दया एवं करुणा से सम्बन्धित है जिसने ईशदूत रसूलों, पैगम्बरों को बेचैन कर रखा था, उस मिशन की ओर है, जो ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) का एक बहुत बड़ा उद्देश्य और मानव कर्त्तव्य था, उस विशाल ज़िम्मेदारी की तरफ़ है जो मुसलमानों को ''ख़ैर उम्मत'' कल्याणकारी समूह बनाती है, इस

लिए यह वास्तविक काम है कि इस रास्ते में मुसिबतों और आजमाईशों के बाद विजय का सिलसिला भी है कहीं व्यक्तिगत तो कहीं एकांकी तो कहीं सामूहिक! और सच पूछिए तो वास्तविक आजमाईश यही है।

इनसान जब मजबूत क़दम व पक्के इरादे के साथ समाज सेवा करता है तो ईश्वर की तरफ से इस पर ईनाम का सिलसिला भी शुरू होता है, इसकी प्रशंसा होती है, नजराने पेश किये जाते हैं, मंच पर उच्च स्थान दिया जाता है। यह पुरुस्कार वास्तव में इसके उत्साह और प्रोत्साहन के रूप में होते हैं, लेकिन कभी कभी प्रशिक्षण की कमी, छोटी सोच और मजबूत देनदारी न होने के कारण से व्यक्ति इन पुरुस्कारों को अपना कारनामा समझकर ''मैं'' और ''हम'' में सक्रिय हो कर अपने आप को पसंद करने का शिकार हो जाता है और इसके हाव भाव से आत्म प्रदर्शन और इसके कार्यों का प्रदर्शन शुरू हो जाती है, फिर काम कम होता है और ढ़िंडोरा अधिक पीटा जाता है, यह सर्वमान्य नियम है कि किसी भी मैदान में अपने आपका प्रदर्शन और ढिंढ़ोरा दोनों चीज़ें इन्सान को धीरे धीरे उदासीन बनाकर मूल उद्देश्य से मोड़ देती हैं, और कभी कभी समयानुकूल फित्ना, बिखराव एवं समाज में तनाव का माध्यम भी बन जाती है।

इसलिए मन मस्तिष्क में यह वास्तविकता ताजा रहनी चाहिए कि मानवता का सन्देश का सम्बन्ध अम्बिया किराम, ईशदूतों से सम्बंधित है, और यह समस्त दौड़ भाग किसी आन्दोलन या जमाअत के विस्तार या मजबूती के लिए नहीं बल्कि ईश्वर के बन्दों को ईश्वर से जोड़ने के लिए है। जब यह विश्वास याद रखने योग्य होगा तो न

सिर्फ अनुकूल अवसर मिलेगा बल्कि प्रत्येक पुरुस्कार को ईश्वर की कृपा और ईश्वर की आज्ञा समझना और प्रत्येक सफलता का सम्बन्ध किसी व्यक्ति के बजाए पूरी टीम को श्रेय देना आसान होगा।

प्रबन्धक की आवश्यकताः

व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक मुसलमान उच्च आचरण करने वाला और मानव मूल्यों का सुरक्षाकर्त्ता है, वह जीवन के प्रत्येक विभाग में मानवता का कार्यकर्त्ता है, अपने ज्ञान एवं चिन्तन और सामाजिक स्तर पर भलाई का आदेश और बुराई पर रोक इसकी बुनियादी ज़िम्मेदारी है, यद्यपि मानवता का संदेश का काम व्यक्तिगत स्तर से अधिक सामूहि स्तर का मांग करने वाला (याचक) है। इस लिए इस काम को संगठित करने की आवश्यकता है ताकि इसके व्यापक प्रभाव से समाज पूरी तरह लभाविन्त होगा।

संगठन का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि इसके लिए पद स्थापित किये जायें, कार्यालयों का निमार्ण कराया जायें और फिर साधारण या विशेष चन्दे किये जायें, अगर यह कोई राजनैतिक आन्दोलन होता तो अवश्य इसमें पद भी होते, विभाग भी होते, शाखें भी होतीं, और क्षेत्रीय कार्यालय भी होते।

लेकिन चूंकि कोई सामूहिक काम का बग़ैर संगठन के करना सरह नहीं, इस लिए परामर्श समिति की व्यवस्था आवश्यक है, अर्थात् आवश्यकतानुसार राष्ट्रीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय स्तर पर परामर्श कमेटी स्थापित की जाये, ताकि उसके द्वारा इस काम को सरलतापूर्वक पूर्ण

किया जा सके और विभिन्न व्यक्तियों को काम करने की दशाए और इनकी योग्यताओ के अनुसार ज़िम्मेदारियां प्रदान की जा सकें, प्रत्येक समिति का एक ऐसा अभिकर्त्ता निर्वाचित हो जो काम की संवेदनशीलता और इसके मांगों को कुशलता के साथ समझता हो, वह काम की देखभाल के साथ आवश्यकता पड़ने पर दूसरों को संन्तुष्ट भी कर सके, अलबत्ता समय–समय से लोगों की उचित मीटिंग और इनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी आवश्यक है।

स्पष्ट रहे कि आज के युग में मुसलमानों से जुड़ी किसी भी तरह की धार्मिक व कल्याणकारी कार्यक्रम सरकार को सोचने पर मजबूर कर सकती है, अर्थात देश का क़ानून इस पर कोई रोक नहीं लगाता फिर भी क़ानूनी मांगों की व्यवस्था आवश्यक है, इस लिए उचित है कि मानवता का संदेश का सामूहिक काम रजिस्टर्ड इदारों के द्वारा किया जाये, और इसकी एक सर्वश्रेष्ठ दशा हमारे स्वतनत्र मदरसे हैं, वह अपने कार्यक्रमों में एक विभाग की तरह इस काम को शामिल कर सकते हैं।

दूसरी दशा कल्याणकारी इदारे हैं जिनके लिए अपनी ज़िम्मेदारी में इस काम को शामिल करना कुछ कठिन नहीं है।

अंत्तिम और सुरक्षित दशा यह है कि इसी उद्देश्य के लिए कोई इदारा पंजीकृत कराया जाये और फिर इसके माध्यम से इस काम को संगठितरूप से पूर्ण किया जाये।

ईश्वर की कृपा से इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय क्षेत्रीय इदारे पंजीकृत हैं और वह अपने अपने स्तर पर सेवाएं प्रदान कर रहे हैं

लेकिन इस काम में जिस प्रभावी जोश एवं जुनून, लगातार, सुदृढय एवं मजबूत क़दमों एवं आत्म विश्वास की आवश्यकता है इस तरफ सम्पूर्ण ध्यान नहीं है।

यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि मानवता का सन्देश किसी संगठित आन्दोलन योजमाअत का नाम नहीं है बल्कि यह इस्लामी शिक्षाओं की व्यवहारिक चिंत्रण है, या यूं समझिए कि किसी घर में लगी हुई भयानक आग को देखकर एक ज़िम्मेदार इंसान के अन्दर पैदा होने वाले भावनाओं का प्रतिविम्ब है, और इन भावनाओं को न प्राप्ति की अभिलाषा होती है और न प्रशंसा प्राप्ति की आशा, बल्कि सच्ची खुशी इन भावनाओं को व्यवहारिक रूप देने में होती हैं, इसलिए मानवता का संदेश के कामों को किसी संसारिक लाभ का माध्यम समझना और किसी राजनीति या भौतिक लाभ की आशा में इससे सम्बन्ध होना बिल्कुल उचित नहीं है, इसी तरह मंच की समस्त गतिविधियों में किसी भी तरह का चन्दा नहीं किया जायेगा, आवश्यकतानुसार कल्याणकारी कार्यों के लिए योग्य व्यक्तियों को आगे बढ़ाया जायेगा, और माल व संसाधन के रूप में जो भी सहयोग होगा इसका विस्तृत विवरण सभापति के पास सुरक्षित होंगे ताकि किसी भी तरह का अविश्वास की परिस्थिति में सुधार करना और सन्तुष्ट करना सरल हो।

सभाएं:

किसी पर दोषारोपण एवं आलोचना या प्रशंसा व स्तुति की

अपेक्षा किये बग़ैर अपनी ज़िम्मेदारी का पूर्ण करना और ईश्वर के दरबार में स्वयं को उत्तरदायी समझना सच्चा प्रेम एवं निस्वार्थ काम है। सच्चा प्रेम समस्त सद्‌कर्मों की आत्मा है, इसके बग़ैर कर्म ऐसे ही हैं जैसे आत्मा के बग़ैर मानव शरीर, सच्चा प्रेम ही वह स्वाभिमान है जिसके आधार पर मानवकर्म ईश्वर के दरबार में स्वीकार किये जाते हैं। धर्म के प्रत्येक काम में जिस तरह निस्वार्थ आधारभूत शर्त है इसी तरह मानवता का संदेश का कार्य भी इसी शर्त के बग़ैर व्यर्थ एवं निर्मूल्य है।

निःस्वार्थ की नेमत एक बहुत बड़ी पूंजी है, इस पूंजी की प्राप्ति कभी बहुत सरल है तो कभी बहुत कठिन, सरल इतना कि केवल अपनी निम्मता एवं निर्बलता और ईश्वर की विशालता का एहसास ही इस पूंजी तक पहुंचा जा सकता है, और कठिन इतना कि लगातार अध्ययनो, अभ्यासों और संघर्षो के बावजूद दिल से ''एहसासे अना'' घमंड का अनुभव नहीं निकलती, इसी लिए विद्ववानों ने हमेशा हृदय की स्वच्छता एवं निर्मलता की तरफ ध्यान दिया है और इसके लिए अनेकों विधियां अपनाई है, मानवता का संदेश के मैदान में अमानतदारी, दुःख दर्द व चिन्ता दो ऐसी विशेषताएं हैं जो निस्वार्थ की महान नेमत से सौभाग्यशाली करने में लाभदायक है।

अर्थात मानवता का संदेश के काम में इन दो आधारभूत बातों की तरफ ध्यान आवश्यक है, पहली यह कि अपनी योग्यताओं और सामर्थय के अनुसार ज़िम्मेदारी ली जाये, और पूरी अमानतदारी के साथ इन ज़िम्मेदारियों को निभाया जाये, केवल दिखावे की भावना से

विभिन्न ज़िम्मेदारियों का बोझ लेकर हतोत्साहित होने से अच्छा है कि पहले ही असमर्थता कर ली जाये, इससे व्यवस्था में असमझता भी नहीं पैदा होगी।

दूसरी बात वह दुख दर्द की चिन्ता है जो दूसरों के हालात से जानकारी के बाद पैदा होना स्वभाविक किसी मनुष्य को परेशानहाल या इसकी ईमानी एवं आचरणीय ख़राबियां देखकर अन्दर की घुटन और चिन्ता का पैदा होना ईमान की मांग है, और ईशदूत मुहम्मद (सल्ल0) की विरासत है, इस लिए जब तक यह मांग पैदा नहीं होगा उस समय तक काम भी आगे नहीं बढ़ सकता, अर्थात किसी का आचरण एवं समाजिक ख़राबी से परिचित होने के बाद इसके सुधार की चिन्ता होनी चाहिए, और इन संसाधनों की प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए जो उसे सीधे मार्ग पर पहुंचा सके।

किसी भी धार्मिक काम में अनावश्यक वार्तालाप, वाद–विवाद, स्वयं का दिखना और स्वभिमानी होने का प्रयासों का कारण निस्वार्थ प्रेम एंव कार्य कमी ही है।

सत्य प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा का स्तर जितना मजबूत और ऊंचा होगा आपसी मतभेद भी इतने हलके और मामूली स्तर के होंगे, और जब निस्वार्थ प्रेम पूर्ण होगा और अपने वास्तविक स्थान तक पहुंचेगा तो मानवीय मांगों से पैदा होने वाले मतभेद भी कृपाशीलता दयालुता का कारण होंगे।

मानवता का संदेश का काम वास्तव में इस्लामी शिक्षाओं की व्यवहारिक तस्वीर है और यह तस्वीर उस समय तक बेरंग है जब

तक इसमें ''खूने जिगर'' न शामिल कर दिया जाये।

नक़्श हैं सब नातमाम ख़ूने जिगर के बग़ैर
नग्मा है सौदाए ख़ाम ख़ूने जिगर के बग़ैर

मानवता के संदेश की सीमाएंः

मानवता का सन्देश की कार्य सीमाएं बहुत विशाल हैं मानव जीवन का प्रत्येक विभाग इसमें सम्मिलित है इसलिए कार्य सीमा के क्षेत्र निश्चित करना संभव नहीं अर्थात व्यवस्था की आसानी और काम के प्रशिक्षण के लिहाज से दो अलग अलग सीमाएं किये जा सकते हैं एक निर्माणकारी और दूसरा कल्याकाणकारी सेवाएं।

निर्माणकारी चिन्ताएंः

मानवता के संदेश का काम वैचारिक एवं व्यवहारिक दोनों स्तरों पर आवश्यक है, एक सच्चे मुसलमान के जीवन का ध्येय व लक्ष्य यही दोनों मैदान हैं जिसमें प्राथमिकता एवं देरी का कोई नियम जारी नहीं है, लेकिन जब सामूहिक रूप से इस काम की शुरूआत किया जायेगा तो काम की तरतीब में वैचारिक अवस्थाओं को प्रमुखता के साथ रखा जायेगा, यानी पहले वातावरण का निर्माण, मानसिकता, व्यक्तित्व का निमार्ण करने का प्रयास किया जायेगा, लक्ष्य व उद्देश्य से परिचित काराया जायेगा, सिसकती व बिलखती मानवता की मसीहाई की गुहार लगाई जायेगी, देश की वास्तविक परिस्थितियों एवं दशाओं से संचेत कराया जायेगा, तब बहुत सम्भव है कि लोग मानवीय आधार

पर सोचने समझने की तरफ अग्रसर हों और समाज से वह गलतफहमियां जो स्वभिमान एवं आत्मसम्मान बेचने वाले राजनीतिज्ञ और ईमान बेचने वाले लेखक पत्रकारों ने पैदा कर रखी हैं और एक ऐसी टीम हमसफर हो जाये जो समान चिन्ता व समान विचार वाली हो। इसी वैचारिक प्रयास को रचनात्मक कृति या निर्माणकारी चिन्तन का शीर्षक दिया गया है, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित शीर्षक शामिल किये जा सकते हैं:

समाजिक सम्पर्क:

सम्पर्कों के द्वारा समीपता एवं सौहार्द पैदा होती है ज्ञान व चिन्तनीय स्तर का ज्ञान होता है और फिर मानसिक निर्माण के मार्ग खुलते हैं, यह मेलमिलाप समाज के प्रत्येक मंच पर और प्रत्येक समाजी शीर्षक के द्वारा सम्भव हैं, अर्थात् व्यक्तिगत मुलाकातें वार्तालाप एवं संवाद की बैठकें, वाद–विवाद व नुकड़ सभाएं, पत्रकार वार्ता व पत्राचार, स्कूल व खेल के मैदानों और चायखानों या मित्रगणों की महफिलें, अर्थात प्रत्येक स्तर व प्रत्येक शीर्षक से समाजिक सम्पर्क मजबूत करना और एक शान्तिमय वातावरण तैयार करना सम्भव है।

सामाजिक सम्पर्क के मंच सरकारी भी हो सकते हैं और ग़ैर सरकारी, अलबत्ता सरकारी विभागों में जाने से पहले वहां के नियम व व्यवस्था से परिचित और उन पर कठोरता से कार्य आवश्यक है ताकि कोई दुर्भावना न पैदा होने पाये।

सामूहिक मुलाक़ातों में वार्तालाप के लिए ऐसे व्यक्ति का चुनाव

किया जाये जो मानवता का संदेश के लक्ष्य व उद्देश्य और कार्यविधि से पूरी तरह परिचित हो, सम्बोधनकर्त्ता को मानसिक व वैचारिक स्तर का इसको ज्ञान हो, सम्बन्धि विभागों के बुनियादी मालूमात भी उसे प्राप्त हो, क्योकि कभी कभी किसी सरकारी अधिकारी से मुलाक़ात करने वाली जमाअत केवल उन मौलवियों की होती है जो कठिन उर्दू बोलते और समझते हैं विशष योग्यता का प्रयोग करते हैं और कभी कभी डर या रौब का शिकार भी हो जाते हैं, इससे सामने वाला इंसान समस्या की संवेदनशीलता व शालीनता को समझने के बजाए अपने समय की बर्बादी का एहसास करता है, और फिर यही से मेलमिलाप की दशा टूट जाती है।

कभी कभी मानवता का संदेश के मंच से यह चिन्ता भी प्रस्तुत किया जाता है कि चूंकि यह काम ग़ैर राजनीतिक है इसी लिए राजनीतिज्ञों से मतभेद और उनसे सम्पर्क उचित नहीं, इस चिन्ता की किसी भी दशा में समर्थन नहीं की जा सकती, क्योंकि मानवीय आधार पर राजनीतिज्ञ भी मानवता के सन्देश के समर्थक हैं बल्कि कुछ कारणों से इनकी मानसिकता निर्माण बहुत से समस्या का समाधान है।

जन सभाएं:

सम्पर्कों की एक विस्तृत दशा विभिन्न क्षेत्रों में जन सभा को सम्पन्न करना है, सश्राा के लिए उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाये जहां परिस्थितियां तनावपूर्ण हों और धामिर्क घृणा को बढ़ावा दिया जा रहा हो, अर्थात विशेष भेंट, सामूहिक परिचय और किसी सीमा तक

परिस्थिति नियन्त्रण के बाद ही यह सभा शुरू किये जायें, इन सभाओं में विशेष रूप से समाजिक व धार्मिक लोगों को आमन्त्रित किया जाये, इनके नाम से पोस्टर और होलडिंग लगाई जाये, और मंच पर इनका सम्मान भी किया जाये, लेकिन सम्बोधन की ज़िम्मेदारी उन विशेष व्यक्ति को दी जाये, जो विषय की गम्भीरता व संवेदना से परिचित और इसके मांगों से अवगत हों, यह बैठक से पहले मुलाकात के द्वारा इनकी मानसिकता को तैयार किया जाये या मानसिकरूप से तैयार हो चुके हों, और वह विषय पर संवाद की पकड़ रखते हों, इसी तरह की सभाओं ने भविष्य में व्यापक स्तर पर प्रभाव पूर्ण किये हैं, जिसका स्पष्ट उदाहरण मौलाना अबुल हसन अली नदवी का कारवाने मानवता है जिनकी सभाओं ने परिस्थितियों को सामान्य करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

संवाद एवं वार्तालाप के आधारः

मुलाकातों, वार्तालाप और जन सभाओं में सिर्फ मानव मूल्यों, उच्च आचरण और देश के कल्याण और विकास को ही वार्तालाप का विषय बनाया जाये, मानव स्वभाव एवं मनस्थिति को ध्यान में रखते हुए किसी भी धर्म पर कोई विवेचना या आलोचना न किया जाये, मानव रक्त के सम्मान की घोषणा की जाये, हर क़िस्म की धार्मिक, क्षेत्रीय बोलचाल व समाजिक मतभेद की मानवता की रुसवाई से इंगित या निर्देशित किया जाये, और देश के निवासियों को पूर्ण विश्वास और शक्ति के साथ यह समझाया जाये कि भारतीय संविधान की पहली

दफा कुछ भी हो जीवन संविधान की पहली दफा यही कहती है कि दुनिया के प्रत्येक इंसान का जीवित रहने का अधिकार है। और अगर मानवीय भेदभाव के आधार पर साम्प्रदायिकता का भूत बोतल से बाहर आ गया तो पूरा देश सौहार्द एवं शान्ति से वंचित हो जायेगा।

कुछ स्वाभिमान बेचने वाले नेताओं और पत्रकारों ने यह गलत फहमी पैदा कर रखी है कि इस देश के विकास और यहां की शान्ती धार्मिक, बोलचाल व सभ्यता की एकता में ही सम्भव है इसलिए पूरे देश में एक ही जीवन व्यवस्था लागू करने का प्रयास करना चाहिए, इस सोच ने पूरे देश को खानों में विभाजित करके यहां की गंगा जमुनी सभ्यता पर पानी फेर दिया है। इसलिए बार बार यह समझाने की ज़रूरत है कि यह देश एक गुलदस्ते की तरह है जिसमें विभिन्न रंगों के फूलों का होना ज़रूरी है, यह बहुत बड़ी गलत फहमी बल्कि बहुत बड़ी अज्ञानता है जो यह समझा जाता है कि एक धर्म और एक सभ्यता किसी देश को मजबूत कर सकती है, दुनिया ने दो विश्व युद्ध देखें हैं एक ही धर्म और एक ही सभ्यता के मानने वालों ने लड़ी है, इसके अतिरिक्त हिन्दू मुस्लिम इतिहास में ऐसी बहुत से युद्ध व झड़पें है। जिनमें दोनों तरफ एक ही धर्म और एक ही सभ्यता के दावेदार थे, वास्तविकता यह है कि न धर्म धर्म से लड़ाता है, न सभ्यता सभ्यता आपसे में टकराते हैं बल्कि मानव के स्वार्थ आपस में टकराती है, शक्ति का घमंड़ टकराता है, फिरौनी गुण और ''रवानी अहंकार'' आपस में टकराता है, इसलिए ऐसे दुष्टप्रचारों से बचने की आवश्यकता है जो इंसान को इंसान से घृणा करना सिखाए दावत का आधारभूत

केन्द्र बिन्दु यह है कि वार्तालाप के आधार हमेशा संगठित आधारों पर हो, इस देश में जो विभिन्न धर्म और सभ्यताओं का गहवारा मानवता ही एक संगठित आधार है जिसे हर कोई स्वीकार करता है, मौलाना हसन अली नदवी अपने दावती अनुभव की रोशनी में कहा करते थे कि जब किसी क़ौम या जाति में दावत का काम करना हो तो पहले इसकी मनोदशा का अध्ययन करो, और जो दरवाजा खुला हो उससे प्रवेश होने का प्रयास करो, अगर बन्द दरवाजे को खेलने का प्रयास करोगे तो तुम्हारी दशा चोर डाकू की होगी और कोई तुम्हारी बात भी सुनना गवारा नहीं करेगा बस इस देश में हम दावत का काम करना चाहते हैं तो मानवता का शीर्षक एक खुला हुआ दरवाजा है जिसके द्वारा ग़ैरों के दिल व दिमाग तक पहुंचा जा सकता है।

साहित्य की उपलब्धता:

मानवता के संदेश के कार्यक्रमों में साहित्य की उपलब्धता एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है अगर इसकी तरफ गम्भीरता से ध्यान न दी गयी तो सारे प्रयास बेकार व अपूर्ण मानी जायेगी और सम्मान योग्य परिणाम की आशा नहीं की जा सकती, अर्थात प्रवक्ता के सामने की प्रशंसा, लक्ष्य व उद्देश्य का उल्लेख विस्तार के साथ उच्च आचरण मूल्यों इन्सानी हमदर्दी, समाज सुधार का प्रयास और जाति व धर्म के विकास व मजबूती की दशा पर आधारित सामग्री प्रस्तुत करना आवश्यक है।

मानवता का संदेश की विषय वस्तु किताब, पम्फलेट, हैडविल

इत्यादि में सीमित न हों बल्कि बदलते हुए हालात और समाचार एवं मीडियाई युग में उन संसाधनों का प्रयोग भी आवश्यक है जो मानसिक निर्माण और परिस्थिति निर्माण में लाभदायक है, अर्थात इस शीर्षक के अन्तर्गत आडियों तैयार कराई जायें, छोटी छोटी वीडियों क्लिप और रील बनाई जाये, परिचय व कार्यक्रमों के लिए वहीप बैज बनाए जायें, मोबाईल एप्लीकेशन तैयार की जायें, सार्वजनिक स्थानों पर होर्ड़िंग लगाई जायें, और सोशल मीडिया का भी प्रयोग किया जाये, और यह सब काम देश की राष्ट्र भाषा या क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाये।

यहां यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि मानवता का संदेश के बैनर तले राष्ट्रीयस्तर पर जो विभिन्न आन्दोलन व जमाअतें सक्रिय हैं इनके पास इस सम्बन्ध में ज़्यादा विषय सामग्री नहीं है इस लिए मुलाक़ातों और जलसों के बाद जो कमी अथवा भ्रम पैदा होती है वह शेष रह जाती है।

राष्ट्रीय स्तर पर सबसे प्रसिद्ध आन्दोलन ''आल इण्डिया प्यामे इन्सानियत फोरम'' है यह वही आन्दोलन है जिसकी शुरूआत मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने की थी इस फोरम के पास मौलाना अली मियां का और फिर इनके जानशीन मौलाना सैय्यद अब्दलु हुस्नी नदवी की परिश्रमिक सामग्री मौजूद है, वीडियोज व आडियोज़ भी हैं, किताबें व पत्रिका भी हैं, विभिन्न भाषाओं में इनके अनुवाद भी हो चुकें हैं, लेकिन काम की विशालता, लोगों की मांग और तेजी से बदलते हुए हालात के अन्तर्गत विषय सामग्री में वृद्धि की और व्यापकता की

आवश्यकता है जिसकी तरफ फोरम के ज़िम्मेदार प्रयत्नशील हैं।

कल्याणकारी सेवाएं:

प्यामे इंसानियत (मानवता का संदेश) का विस्तृत एवं विशाल क्षेत्र विचारधारा तक सीमित रहा तो समस्त प्रयास व्यर्थ हो जायेंगे और परिणाम निर्मूल्य होंगे, इस लिए परिस्थितियों के निर्माण के साथ ऐसी व्यवहारिक दशाएं अपनाना भी आवश्यक है जिनसे इस्लाम की वास्तविक चित्र सामने आ सके और मुसलमानों के सम्बन्ध में जो गलत फ़हमियां और बदगुमानियां फैलाई गई हैं उनको दूर किया जा सके। इनके व्यवहारिक सूरतों को कल्याण से भी सम्बोधित किया जाता है।

विज्ञान एवं टेक्नालोजी के युग में मानवीय आवश्यकताएं तेजी से बदल रही हैं सामाजिक जीवन को किसी स्थान पर ठहराव नहीं, नित्य नये दिन नित्य नई समस्याएं हैं विभिन्न क्षेत्रों में भी भौगोलिक आवश्यकता भी हैं जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर अपनाया जा सकता है अर्थात कुछ स्वभाविक कार्य ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक समाज सम्मिलित है, उन्हें भ्रमित किये बिना मुद्दों पर पूर्णरूप से ध्यान दी जा सकती है।

नोट:

उपरोक्त दोनों क्षेत्र बहुत ही विशाल और व्यापक हैं, इसके विभिन्न पहलुओं पर देश की कुछ संगठन अपने सीमित क्षेत्र में क्रियाशील हैं अलबत्ता हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नदवी ने मानवता का संदेश के शीर्षक से जो आन्दोलन बरपा की थी आज वह

देशव्यापी स्तर पर सक्रिय है, सैकड़ों व्यक्ति इससे जुड़े हैं, और मानवता निर्माण एवं मानव सेवा के शीर्षक से जो भी कार्य सम्भव है इसमें इसकी सेवाएं अनुकरणयोग्य हैं इसी आन्दोलन के परिदृश्य में मानवता का संदेश के कार्यों का उल्लेख नीचे किया जाता है।

चिकित्सा सहयोगः

मानव सहयोग एवं हमदर्दी का सबसे महत्त्वपूर्ण विभाग चिकित्सा सम्बंधी सेवाओं का है, यही वह विभाग है जहां लोग धर्म जाति, बिरादरी इत्यादि का भेद भाव से आज़ाद होकर मानवता को महानात्म एवं प्रमुख काम रखते हैं इसलिए कल्याणकारी कार्यों में इस विभाग को सबसे सम्मानीय स्थान दिया जाता है।

इस विकासशील देश का एक बड़ा समूह आज भी बुनियादी चिकित्सा की सुविधाओं से वंचित है, कभी संसाधन की कमी तो कभी सही नेतृत्व न होने के कारण से विभिन्न बीमारियों में उलझा हुआ है, अत्याधिक राशी ख़र्च करने के बावजूद सन्तोषजनक इलाज नहीं मिल पाता। गांव क्षेत्र की दशा तो और भी ख़राब है, न अच्छे डाक्टर है न अच्छे हस्पताल हैं, जनता झोलाछाप डाक्टरों पर आश्रित हैं। गम्भीर बीमारियों में वह शहर की ओर भागते हैं जहां उचित मार्गदर्शन न मिलने पर शोषण का शिकार हो जाते हैं, कितने अफसोस की बात है कि चिकित्सा का विभाग मानव जीवन में जितना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है उनता ही भ्रष्टाचार का शिकार है।

एक साधारण आदमी सबसे अधिक ईलाज करवाने में परेशान

होता है, इस समय इसका स्वभाव बहुत ही संवेदनशील हो जाता है, प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास करना, हर तरह के प्रयोग करना बार बार परामर्श करना एक असामान्य सी दशा हो जाती है, और यही वह स्थान होता है जब इसे किसी निस्वार्थ सच्चे मित्र की भलाई एवं सहयोग की बहुत आवश्यकता होती है।

इस विभाग में सेवाओं की विभिन्न सूरतें अपनाई जा सकती हैं क्रमानुसार व नियमितता के साथ सरकारी अस्पतालों का दौरा किया जाये, साफ सफाई एवं कार्यों का निरिक्षण, मरीज़ों और तिमारदारों की कुशलक्षेम मालूम की जाये, सामर्थ के अनुसार सहायता की जाये इत्यादि अलबत्ता यह काम अस्पताल के अधिकारियों को विश्वास में लेकर और वहां के स्टाफ से सद्व्यवहार एवं अनुशासन से पेश आकर ही सम्भव है।

- ☆ चिकित्सीय सेवाएं
- ☆ मेडिकल कैम्प
- ☆ बल्ड़ डोनेशन कैम्प
- ☆ आई टेस्ट कैम्प
- ☆ दवाओं का वितरण
- ☆ मेडिकल जांच, इत्यादि

शैक्षणिक सहयोगः

क़ौम व देश के निर्माण का आधार सही शिक्षा और सही चिन्ता है, केवल शिक्षा या केवल चिन्ता नाकाफी है, समाज में बहुत से

व्यक्ति मौजूद हैं जिनके पास ढ़ेरों डिग्रियां हैं लेकिन वह सही चिन्तन से वंचित हैं या जिनके पास सही चिन्तन तो है लेकिन जानकारी एवं ज्ञान के विषय में शुन्य हैं, ऐसे व्यक्ति समाज निर्माण व विकास में कोई सकारात्मक भूमिका अदा नहीं कर सकते, बल्कि इनकी ''सकारात्मक प्रयास'' मुसबत कोशिश के परिणाम भी सकारात्मक नहीं हो सकते। लेकिन इस वास्तविक्ता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज शिक्षा एक लाभदायक व्यापार और जनता के शोषण का एक सुन्दर माध्यम बन चुकी है, इस पर कुछ संस्थान द्वारा शिक्षा के पाठ्क्रम को घृणा और धार्मिक ईर्ष्या के रंग में रंगने की कोशिश की जा रही है, ऐसे में सही शिक्षा और सही सोच के केन्द्र या तो व्यापारिक मीडिया बन चुकी हैं या घृणा ईर्ष्या के स्थाई अड्डे और जनसाधारण सब कुछ जानते हुए भी इन अव्यवस्थता का शिकार होने पर मजबूत हैं, ऐसे वातावरण में किसी का सही मार्गदर्शन करना, सही सोच देना इसके भविष्य को सवारने का प्रयास करना वास्तव में मानवता की महान सेवा है, इस लिए शिक्षा के मैदान को टारगेट करने की आवश्यकता है ताकि छात्र की सही शिक्षा एवं सोच को स्वास्थ्य दिशा की ओर मार्ग प्रदर्शन किया जा सके।

स्कूलों कालेजों में ऐसे छात्र की बड़ी संख्या है जिनके अन्दर विभिन्न योग्यताऐं मौजूद हैं लेकिन कभी पिछड़ापन, निर्धनता, आर्थिक संकट, व्यवस्था से आज्ञानता और कभी गलत मार्गदर्शन की वजह से मानसिक तनाव का शिकार होकर हीन भावना में ग्रस्ति हो जाते हैं और इन्हें अपना भविष्य अंधकारमय नज़र आने लगता है, ऐसे छात्रों

की सही दिशा निर्देशन एवं मार्गदर्शन करना आवश्यक है ताकि वह सफल मानव और अच्छे शहरी बन सकें।

- ☆ छात्रों से सम्पर्क करने की विभिन्न दशाएं
- ☆ लिखित प्रतियोगिता
- ☆ भाषण की प्रतियोगिता
- ☆ अध्यात्म मुकाबले
- ☆ कैरियर गाईडेन्स
- ☆ छात्रवृति (स्कालरशिप)
- ☆ अन्य आर्थिक सहायता
- ☆ आवश्यकताओं की पूर्णयता एवं प्राप्ति
- ☆ पुस्ताकालय की स्थापना
- ☆ होस्टल की स्थापना
- ☆ स्टूडेन्ट यूनियन से विचारों का आदान प्रदान
- ☆ फीस की अदायगी

आर्थिक सहायताः

स्वार्थ, लाभप्रस्त और समाजिक स्तर पर भेदभाव से उठने वाला जीवन व्यवस्था सामूहिक मूल्यों व कार्यों को ध्वस्त कर देता है और एक ऐसा समाज का निर्माण करती है जिसमें आप्रकृतिक मतभेद पर आधारित होते हैं और एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो समाज को दो अलग अलग खानों में विभाजित करती है अमीर की अमीरी और ग़रीबों की ग़रीबी के मध्य एक ऐसी खाई स्थापित हो जाती है जो इंसानों को

शासकों और प्रजा के वर्गों में विभाजित करती है, फिर दोनों वर्ग एक दूसरे से परेशान एवं स्वयं का एकाकी कद लेता है।

आर्थिक परेशानियों के साथ न कोई समाज खुशहाल हो सकता है और न इसके व्यक्ति सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकते हैं, आर्थिक कमज़ोरी इंसान को व्यभिचारी, वेश्यावृति और अपने स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान का सौदा करने लगता है बल्कि खुले तौर पर ईमान बेचने का मार्ग पर भी ले जा सकती हैं ऐसा व्यक्ति समाज के विकास व मजबूती में बड़ी रुकावटें खड़ी करता है और इसकी योग्यताएं वातावरण को ख़राब करने में व्यर्थ होती रहती हैं और समाजिक कल्याण का काम अवरुद्ध होकर रुक जाता है।

बढ़ती हुई महंगाई, बेरोजगारी और नौकरियों में तरफदारी, पक्षपात के कारण से समाज में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है, जो अपनी भूख मिटाने के लिए ग़लत रास्तों पर चल पड़ते हैं, और कभी कभी क़टटरपंथी लोग एवं विघटनकारी संगठन ऐसा मजबूर व्यक्तियों को अपने कार्य के लिए भी प्रयोग करती हैं, फिर वह पेशेवर अपराधी बन जाते हैं या इनका जीवन विभिन्न परेशानियों एवं समस्याओं में उलझकर रह जाती हैं।

मानवता के संदेश की टीम को ऐसे व्यक्ति को चिन्हित करनी चाहिए और इस मजबूर व कमज़ोर वर्ग की आर्थिक मदद करनी चाहिए ताकि ग़रीबी व भूख का शिकार वर्ग दो समय की रोटी के लिए किसी पर आश्रित न रहे, और इसकी योग्यताऐं विघटनकारी या विनाशकारी के बजाये समाज के निर्माण में उपयोगी सिद्ध हों और

इनका भविष्य आनन्दमय एवं उज्जवल बन सके।

आर्थिक सहयोग की कुछ सूरतें:

- ☆ रोजगार देना
- ☆ राशन का वितरण
- ☆ व्यापारिक परामर्श
- ☆ दवा ईलाज की कोशिश
- ☆ स्कूली आवश्यकताएं
- ☆ मकान का निर्माण इत्यादि।

सामाजिक सहयोगः

सामाजिक कल्याण व विकास का अर्थ सामूहिक समस्या को मानवीय आधारों पर हल करना और निर्माणकारी प्रयासों को इस तरह नियोजित करना कि कोई व्यक्ति जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित न रहे, न कोई मरीज़ दवा के लिए तड़पे, न कोई बेघर छत को रोए न कोई अज्ञानता के अंधेरे में भटके और न कोई दो समय की रोटी का मोहताज हो, ऐसे मजबूत समाज का निर्माण अत्याधिक समानता, सहयोग व हमदर्दी और कल्याण की भावना पर आधारित होती है, और यह वह आधार है जिनसे आज का अविकासित समाज वंचित है।

आज का मानवीय समाज विभिन्न वर्गों में जकड़ा हुआ है कल्याणकारी और निर्माणकारी का समस्त प्रयास विशेष दृष्टिकोण और विशेष उद्देश्यों के लिए दी जा रही हैं, धर्म एवं सभ्यता, जाति व

बिरादरी, रंग व नस्ल और विभिन्नता एवं प्रधानता के आधार पर लोगों को जांचा व परखा जा रहा है, ग़रीबों का शोषण और मजबूरियों का सौदा समान्य स्वभाव बन चुका है, भौतिक व भौतिकता की चाहत ने पवित्र रिश्तों को भी ध्वस्त एवं अपवित्र कर रखा है, ऐसी परिस्थितिओं में केवल मानवीय आधारों पर समाज की सेवा और विद्वानों और कार्यकर्ताओं की कोशिशों को किसी क्रांतिकारी से कम नहीं और यह क्रांति वही व्यक्ति कर सकता है जो मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण हो और इसकी मसीहाई के लिए चिन्तामग्न एवं सक्रिय हों।

समाज में हर क़दम पर ऐसे व्यक्ति से वास्ता पड़ता है जो किसी न किसी परेशानी में पड़ा हुआ है। और किसी भी दया की सहायता का मुहताज है, बुनियादी सहायता और उचित मार्गदर्शन से इनकी मानसिकता एवं सोच का निर्माण किया जा सकता है और फिर इनसे मानवता की सेवा भी ली जा सकती है।

सहायता की विभिन्न सूरतें सम्भव हैं, उदाहरण के तौर परः

☆ खाना खिलाना

☆ वृद्धजन की देखभाल करना।

मुस्लिम आन्दोलन की कल्याणकारी कार्यक्रमः

मुसलमानों की अक्सर आन्दोलन और जमाअतें कल्याणकारी सेवाओं से सम्बंधित है इन आनदोलन की सथापना अगरचे अन्य क़ौमी व मिल्ली कार्यक्रमों के दृष्टिकोण से हुआ था, लेकिन जन सेवा की भावना, अन्तर्राष्ट्रीय एकता की कोशिशें और धर्म की दावत के लिए

वातावरण के निर्माण की चिन्ता हमेशा उद्देश्य में सम्मिलित रही। यही कारण है कि कुछ वह संगठन जो मुसलमानों की विशेष धार्मिक व राजनैतिक मार्गदर्शन या शैक्षणिक सेवाएं एवं शैक्षिक जागरुकता की भावना से अस्तित्व में आई थीं वह भी कल्याणकारी सेवाओं से सम्बंधित हैं।

नीचे कुछ प्रसिद्ध आन्दोलन व जमाअतों की कल्याणकारी सेवाओं का वर्णन किया जा रहा है जिस से मुसलमानों के सोच और देश व मिल्लत के लिए कल्याण की भावना को अच्छी तरह समझ जा सकता है।

जमाअत उलेमाए हिन्दः

जमाअत उलेमाए हिन्द भारतीय मुसलमानों की सबसे प्राचीन संगठन है दिनांक 28–29 दिसम्बर सन् 1919 ई0 को स्थापना दिवस सम्पन्न हुआ जमीअत उलेमा हिन्द की सेवाओं के बहुत से अध्याय और शिर्षक हैं, स्थापना से लेकर अब तक जमीअत का एक मिशन और विज़न रहा जिससे ज़िम्मेदारान जमीअत ने कभी विमुख नहीं हुई, अपने इस सौ साला की यात्रा में इन्हें उद्देश्यों और नियमों पर क्रियाशील रही जो जमीअत के कार्यकर्त्ता, अधिकारी एवं संस्थापकों ने तय किये थे, इस जमात के रिकार्ड से स्पष्ट अनुमान लगाया जा सकता है कि इसने मुसलमानों के धार्मिक, मिल्ली, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षणिक और राजनैतिक व अन्य कार्यों एवं उद्देश्यों में हमेशा लोगों का मार्गदर्शन का कर्त्तव्य निभाया है, मानवीय अधिकार की सुरक्षा,

धार्मिक भाईचारा, शांति एवं सौहार्द, धार्मिक उन्माद और घृणा की समाप्ति, अल्पसंख्यक और अन्य शोषित पिछड़े लोगों व मजबूर वर्गों की समस्या इसके ऐजेन्डे में हमेशा प्रमुखता से रहे हैं।

इसके साथ धार्मिक नियम की सीमा के अनुसार ग़ैर मुस्लिम भाईयों के साथ हमदर्दी सौहार्द एवं मित्रता की स्थापना भी इसके उद्देश्य में शामिल है।

जमीअत उलेमा की अनेकों कार्यक्रम बिना भेदभाव धर्म व मिल्लत केवल मानवीय आधारों पर स्थापित है प्राकृतिक आपदा और दुर्घटनाएं एवं दंगों के अवसर पर यह संगठन सबसे आगे नज़र आता है, असहाय, जरूरतमंदों की हर तरह से मदद करना, रिलीफ पहुंचाना, बेसहारा लोगों के सरों पर छत की व्यवस्था करना, दवा–इलाज की व्यवस्था करना इसके महत्त्वपूर्ण कार्य हैं।

देश के लोगों की इस्लाम और मुसलमानों से सम्बंधित गलतफहमियों और दूरियों को कम करने के लिए यह संगठन नये–नये प्रयोग एवं परीक्षण करती है, वर्तमान समय में ''सुध भावना मंच'' के अन्तर्गत देश के विभिन्न क्षेत्रों में सुध भावना संसद के शीर्षक से लगभग एक हज़ार कार्यक्रम का आयोजन स्वयं में एक बहुत बड़ा कारनामा है, इन कार्यक्रमों में अन्य कौम व धर्म के प्रतिनिधियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया और राष्ट्रीय एकता और शान्ति का सन्देश दिया गया।

इस अवसर पर अपने विशेष संदेश में अमीअत उलेमा हिन्द के सभापति मौलाना महमूद मदनी ने कहाः

"हिन्दुस्तान हमारा वतन है, इसके चप्पे चप्पे से हमें फितरी मुहब्बत है, इस देश की सबसे बड़ी पहचान अनेकता में एकता है, यहां सदियों से विभिन्न सभ्यताओं और धर्मों के लोग मिलजुल कर रहते आये हैं, अंग्रेज जैसी अत्याचारी शासन भी हमारी इस पवित्र महानता को पूरी तरह समाप्त करने में असफल रही।"

सुध भावना मंच के कार्यक्रमों में समान्य रूप से इस तरह के नारे भी स्थापित किये जाते हैं जिन से कार्यक्रमों के स्वभाव एवं उद्देश्य को स्पष्टता से समझा जा सकता है, मानवता का राज होगा पूरा भारत साथ होगा, "घृणा मिटाओं देश बचाओ"

न तीर से न तलवार से
देश चलेगा प्यार से

जमाअते इस्लामी हिन्दः

दिनांक 26 अगस्त सन् 1948 ई0 को जमाअत इस्लामी हिन्द की स्थापना हुई, यह जमाअत हिन्दुस्तानी मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत है जिसका उद्देश्य एवं कार्य धर्म की स्थापना और इस्लामी व्यवस्था की स्थापना है और यह उसी समय सम्भव है जब देश में हालात सामान्य हो और देश का अल्पसंख्यक वर्ग सन्तुष्ट हो, जिसकी बुनियाद केवल मानवीय मूल्यों एवं परम्पराओं और संगठित मानवीय आवश्यकताएं हो सकती हैं, यही कारण है कि जमाअत इस्लामी ने

जरूरतमंदों, इच्छुक व्यक्तियों विध्वा अनाथों, बहुमुखी छात्रों प्राकृतिक आपदा, बाढ़, जलजला, दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए और मनुष्यों के लिए दुःख और खुशी के अवसर पर इनकी मदद के लिए जन सेवा का व्यवस्थिति प्रबन्ध करना है।

जमाअते इस्लामी हिन्द ने लोगों के अन्दर उत्साह एवं विश्वास पैदा करने और मानवता के निर्माण में सकारात्मक भूमिका देने की तरफ प्रोत्साहित किया, शिक्षित एवं अशिक्षित लोगों के सामने इस्लाम को एक पूर्ण धर्म और एक मात्र जीवन व्यवस्था के तौर पर प्रस्तुत किया, धर्म की सच्ची कल्पना को स्पष्ट किया और इसके लिए व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य तैयार किया। इसने देशवासियों को बताया कि पवित्र कुरआन समस्त संसार के इंसानों के लिए जीवन विधि एवं जीवन जीने की शैली है, और ईशदूत मुहम्मद साहब (सल्ल0) समस्त मानवता के लिए मार्गदर्शक बनाकर संसार के भेजे गये हैं।

इस संगठन ने समाज सेवा के मैदान में बहुत से महत्त्वपूर्ण काम किये है। जहां जहां फसाद फूट पड़े और प्राकृतिक आपदा से तबाही आई वहां वहां बहुत बड़े पैमाने पर रीलिफ के कामों को स्थापित किया गया। देशभर में दवाखाने, कल्याणकारी एवं रचनात्मक कमेटियां, शैक्षिक विभाग, माईक्रो फाईनान्स, बिला ब्याज इदारे इत्यादि स्थापित किये गये, कोरोना संक्रमण काल में जमाअत इस्लामी के विभाग समाज सेवा की महत्त्वपूर्ण सेवाओं ने पूरे देश के स्वाभिमानी और मानवता का दर्द रखने वाले नागरिकों को जागरुक करने का

काम किया।

इंडियन यूनियन मुस्लिम लीगः

दिनांक 30 दिसम्बर सन् 1906 ई0 में आल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना की गयी थी, ब्रिटिश भारत में यह मुसलमानों की एक राजनैतिक जमाअत थी और दक्षिणी महाद्वीप में मुस्लिम राज्य की स्थापना के लिए सबसे अधिक गतिशील शक्ति थी, भारत विभाजन के बाद सन् 1948 ई0 में इस जमाअत की पुनः नव निर्माण हुआ और ''इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग'' (IUML) के नाम से सक्रिय हुई, इसके उद्देश्य में जहां मुसलमानों की धार्मिक व राजनैतिक मार्ग दर्शन है, वहीं यह देश की एकता व सुरक्षा और विशेषकर देश के अन्य अल्पसंख्यकों के कल्याणकारी कार्य भी शामिल हैं, इस उद्देश्य के अंत्तर्गत यह जमाअत सर्व धर्म की स्थापना और सेमीनार भी करवाती है।

इसकी सर्वधर्म कार्यक्रमों में इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि समस्त हिन्दुस्तानी विभिन्न धर्म के मानने वाले हैं। इन्हें अपने धर्म को ठीक तरह से समझना चाहिए और समस्त धर्म के मध्य प्रेम, मोहब्बत और प्यार फैलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान में आध्यामिकता को सुरक्षित रखने और एकता, परस्पर सम्बन्ध, भाई चारा, परस्पर स्नेह, दयालुता और मानवता को सुरक्षित रखने के लिए धर्म भिन्न होने के बावजूद एक साथ मिलजुलकर यात्रा करना चाहता है।

हिन्दू मुस्लिम एकता एवं परस्पर पर मेल मिलाप और आपस में

भाई–चारा को बढ़ावा देने के लिए समस्त प्रदेश की राजधानियों में "The Journey of Harmoney" कार्यक्रम वर्णनयोग्य भी है और अनुकरणीय भी।

उत्तर प्रदेश इंडियन यूनियन मुस्लिम लींग के महासचिव एडोकेट मुहम्मद ओवैस ने एक अवसर पर कहा था:

> "इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग को स्थापित करने का एक उद्देश्य यह भी था कि देश मे सभी धर्म के लोगों को साथ में रखकर समस्या का समाधान निकाला जाये ताकि देश में एकता स्थापित रखने के साथ ही आपसी मतभेद को समाप्त किया जा सके"

रज़ा एकाडमी:

सन् 1978 ई0 में स्थापित हुई रज़ा एकेडमी एक सुन्नी इस्लामी संगठन है जो बरेली विचारधारा एवं सोच से सम्बन्ध रखते हैं, संगठन का मूलरूप से इस्लामी पुस्तकों के प्रकाशन एवं प्रसारण तथा विश्लेषण का कार्य करती है, लेकिन अपनी कल्याण्कारी एवं निर्माणकारी सेवाओं के कारण से भी रजा एकेडमी पहचानी जाती है।

रज़ा एकेडमी के सर्वेसर्वा श्री हाजी मो0 सईद नूरी ने एक अवसर पर का था:

> "यह हमारा वतन है हमारे देश में दंगा–फसाद, फित्ना हो हमें इसे सहन नहीं कर सकते हैं, लोग राजनैतिक लाभ के लिए भारत के गंगा जमुनी सभ्यता

और भाईचारा को घृणा के नरक में झोंक देने के प्रयत्न में हैं, वह होश एवं समझदारी से काम लें, अब देश का नवयुवक पढ़ा लिखा हो गया है, वह राजनेताओं के घृणा भरे भाषणों को अच्छी तरह समझता है, आज की नई पीढ़ी भारत को दुनिया के मानचित्र में सबसे ऊँचे स्थान पर ले जाने के लिए संघर्ष में है और यह तब होगा जब देश में प्रेम की गंगा और मुहब्बत की जमुना बहती रहेगी।''

सन् 2021 ई0 को बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता और राहत में रजा एकेडमी ने महत्त्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की थी।

आल इंडिया उलेमा बोर्डः

इस बोर्ड की स्थापना सन् 1989 ई0 में हुई थी, यह एक अन्तर्राष्ट्रीय आस्था का संगठन है जिसका उद्देश्य समाज के सभी जातियों एवं क़ौमों के लोगों को इकठ्ठा करना और देश में शान्ति व्यवस्था को बनाए रखना है।

बोर्ड ने मुस्लिम हिन्दू एकता के सम्बन्ध में बहुत प्रयास किये हैं, देश में राष्ट्रीय एकता व परस्पर प्रेम को स्थापित रखने के लिए ईद मिलन के कार्यक्रमों को सम्पन्न किये, अब तक इसने लगभग 73 कार्यक्रमों का उद्घाटन किया जिसमें विभिन्न विचारधाराओं के साथ ग़ैर मुस्लिमों को भी सम्मिलित किया गया और इन कार्यक्रमों के द्वारा एकता का सन्देश प्रस्तुत किया गया, यह बोर्ड अपनी अन्य विचारणीय

कार्यक्रमों के साथ साथ एकता का प्रयास करने के लिए भी प्रसिद्ध है।

इसके विभिन्न कार्यक्रमों में ''क़ौमी अल्पसंख्यक कान्फ्रेन्स बाराए शान्ति एवं न्याय'' (सन् 2021 ई0) की आवाज देश के विस्तृत भागों में सुनी गई, विद्वानों बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त अन्य धर्मों के भी लोगों का प्रतिनिधित्व भी शामिल था। इस अवसर पर बोर्ड की तरफ से अपील की गयी कि हम ऐसे समस्त प्रयासों और कार्यों का हिस्सा बनें जो देश में शान्ति व्यवस्था और विकास एवं कल्याण के लिए चलाई जा रही है हमारा प्रयास होना चाहिए कि देश में कोई भूखा न सोने पाये, किसी ज़रूरतमन्द व्यक्ति का शोषण न हो और हम सब शान्ति एवं सौहाद्र के दूत बनकर रहें।

आल इंडिया मिल्ली कौंसिलः

सन् 1992 ई0 में जब देश के हालात अत्यन्त संवेदनशील एवं तनावपूर्ण थी, सम्प्रदायिक दंगों से देश जूझ रहा था, पूरा देश भय व ख़ौफ एवं घोर संकट के अंधेरे में डूबा हुआ था, ऐसे असामान्य परिस्थितियों में चिन्तनशील विद्वान माननीय मौलाना काज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी ने देश के प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ मिलकर समस्या के समाधान के लिए आल इंडिया मिल्ली कौंसिल की स्थापना की।

मिल्ली कौंसिल का मुख्य उद्देश्य क़ौम का मार्ग दर्शन करना और जीवन के विभिन्न मोर्चों पर इसे नेतृत्व की भूमिका के लिए तैयार करना है, लेकिन ज्ञानी एवं बुद्धिजीवि इस बात से भली भांति परिचित हैं कि धर्म व मिल्लत की सेवा और इसके लिए चिन्तन शीलता उस

समय तक लाभदायक नहीं हो सकती जब तक देश के बहुसंख्यक वर्ग के मन मस्तिष्क को साफ और शंकाओं से पवित्र न किया जाये। यही कारण है कि हिन्दुस्तान की समस्त धार्मिक इकाईयों और वर्गों के मध्य दया और कल्याण की परस्पर भाई चारे और देश में शान्ति व सौहाद्र को उन्नति पर चढ़ाने के लिए प्रयास करना भी मिल्ली कौंसिल के उद्देश्य में सम्मिलित है।

अर्थात मिल्ली कौंसिल के लक्ष्य एवं उद्देश्यों में यह चीज़ें शामिल हैंः

''देश के बढ़ते हुए साम्प्रदायिकता और कट्टरता, घृणा और आतंक के प्रवाह के मुक़ाबले के लिए विद्वानों के विचारों एवं लोगों को जागरुक करना, हिन्दुस्तान की समस्त धार्मिक व सभ्यताओं की इकाई और वर्गों के मध्य कल्याण व कुशलक्षेम और मित्रता एवं भाईचारे के सम्बन्ध को मज़बूत करने की कोशिश करना और इनके अन्दर परस्पर एकता का वातावरण पैदा करना और हिन्दुस्तान के समस्त नागरिकों विशेषकर अल्पसंख्यक और असहाय मजलूम वर्गों की जान माल, इज्ज़त व मान सम्मान एवं सांस्कृतिक व सभ्यता की रक्षा का प्रयास करना''

अर्थात मिल्ली कौंसिल के बैनर तले शुरू ही से बिना भेदभाव धर्म मिल्लत निर्धन और जरूरतमंद की सहायता, इनकी कुशलता, हाल चाल और अन्य कल्याणकारी सेवाएं दी जा रही हैं, इसके अतिरिक्त सरकार की तरफ से मिलने वाला सहायता अनुदान एवं सुविधाए एवं अन्य योजनाओं से लाभ उठाने के लिए असहाय, निर्बल, निर्धन एवं

ज़रूरतमंदों की सहायता करना और इनके आवश्यक काग़जात तैयार करवाना मिल्ली कौंसिल की महत्त्वपूर्ण सेवाएं हैं।

सिफाबियतुल मालः

हैदराबाद में स्थिति देश का यह प्रसिद्ध कल्याणकारी एवं निर्माणकारी इदारा है जो विगत तेरह वर्षो (सन् 2010 ई0) से मानवता के आधार पर मानवीय सेवा के कर्त्तव्य को सम्पन्न कर रहा है, शहर में इसके बीस से अधिक विभिन्न प्रकार के विभाग और विभिन्न प्रदेशों में पचास से अधिक शाखायें स्थापित हैं इसके अतिरिक्त बीसियों स्थानों पर विभिन्न प्रकार के संगठन इसके मार्ग दर्शन में समाज सेवा में व्यस्त हैं।

जनसाधारण के सहयोग से सफावियतुल माल की कल्याणकारी कार्यक्रमों प्रशंसनीय योग्य व अनुकरणीय हैं और समाज के उत्थान के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

यह विभाग पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की इज्जत और उनके पिछड़ेपन का पता लगाकर इन्हें सहायता पहुंचाता है।

इसके द्वारा सैकड़ों विधवाओं के मांसिक वज़ीफे भी जारी करता है एक ही घर में मौजूद दो या दो अधिक असहाय निर्बलों के भरण पोषण में भी इसने अपने ज़िम्मे ले रखी है।

'शिफा हेल्थ केयर सेन्टर' के अन्तर्गत डाक्टरों की टीम मुफ्त सेवाएं प्रदान करती है, प्रतिदिन सैकड़ों बीमारों का निशुल्क इलाज होता है और दवाए भी निशुल्क वितरित की जाती हैं।

शहर हैदराबाद के उस्मानिया अस्पताल में लगातार ठंडा और स्वच्छ पानी बीमारों और मुसाफिरों को पिलाया जाता है और इस सेवा के लिए सफाबियतुल माल ने इन दोनों अस्पतालों में वाटर प्लान्ट भी लगा रखा है। सफाबियतुल माल ने रोगियों को खून उपलब्ध कराने के लिए शिफा ब्लड डोनेशन सर्विस भी स्थापित की है, अर्थात निर्धन रोगियों के लिए दवा समाग्री वाकर, व्हील चेयर, एअर बेड़ इत्यादि भी हमेशा विभाग में उपलब्ध रहते हैं। बेरोजगार युवकों को रोजगार दिलाने के लिए शिफा रोजगार विभाग भी स्थापित किया गया है। सर्दी के मौसम में फुटपाथों और रेलवे स्टेशनों इत्यादि के पास सर्दी में ठिठरते हुए लोगों को बिना भेदभाव किये कम्बल वितरण भी प्रतिवर्ष की जाती है।

शिफा बैतुल माल सामान्य अर्थों में सिर्फ एक विभाग नहीं बल्कि एक देशव्यापी कल्याणकारी आन्दोलन है। ईश्वर जाने कितने मजबूरों, विधवाओं, अनाथों, ग़रीबां गंदीवां और सताए हुए लोगों के लिए यह एक सहारा और आसरा बन गया है।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंचः

यह संगठन अपने विशेष विचारधारा एवं विशेष पृष्ठभूमि के साथ मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के मध्य की दूरी को ख़त्म करने के लिए प्रयास कर रहा है यह अपनी विचार, दृष्टिकोण एवं कृति में हिन्दुपरस्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर0 एस0 एस0) से प्रभावित हैं, सन् 2002 ई0 में उस समय आर, एस, एस, अध्यक्ष के, एस, सुदर्शन

की उपस्थिति में मुस्लिम कम्युनिटी के साथ बात चीत बढ़ाने के लिए इसे स्थापित किया गया था, इस संगठन ने बीस साल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के दौरो किये और विशेषकर मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्रों में अपने खेमे गाड़ दिये।

चूंकि यह संगठन हिन्दु मुस्लिम गहराई को पाटने की बात करती है इस लिए भाले लोग और इस्लामी शिक्षाओं से जानकारी न रखने वाले सज्जन इसे एक अच्छा क़दम स्वीकार करते हैं और इसके प्रयासों की सराहना करते हैं, हालांकि इसकी एकता का आधार वर्तमान परम्पराओं एवं मानवीय मूल्यों के बजाए इस्लामी शिक्षा से दूरी और देश के राष्ट्रीय धारे में जम होने की है।

हिन्दू मुस्लिम एकता के नाम पर इस संगठन के कार्यक्रमों को मीडिया में काफी कवरेज भी मिलता है और इसके कार्यक्रम संसाधनों को अधिकता के साथ सम्पन्न होते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि यह संगठन देवमलाई सभ्यता को बढ़ावा देने और हिन्दुत्व विचारधारा के प्रचार–प्रसार के लिए काम करती है, इस लिए जाहिरी तौर पर अगरचे इसकी कार्य सीमा मानव कल्याण एवं मानवता का संदेश है, लेकिन वास्तव में मुस्लिम क़ौम को कमज़ोर करने की साज़िश है।

आल इंड़िया पयामें इंसानियत फोरमः

देश की जितनी भी आन्दोलन जमाअते, संगठन और विभाग मानव सेवा में क्रियाशील है इनके मुख्य उद्देश्य उम्मते इस्लाम की धार्मिक, मिल्ली व राजनैतिक मार्गदर्शन है, मानव का संदेश का काम

गौण रूप से शामिल है, यही कारण है कि यह कार्यक्रम गौण दिखाई देती हैं, लेकिन मानवता का सन्देश फोरम वह एक मात्र आन्दोलन है जो इसी उद्देश्य के लिए बपा की गई है इसकी कार्यसीमा निमार्णकारी रचनाएं और कल्याणकारी सेवाएं दोनों पर स्थापित हैं, यह एक आदर्श आन्दोलन है जिसके प्रतिनिधि देश के लगभग सभी छोटे बड़े शहरों में फैले हुए हैं।

इस्लाम के चिन्तक मौलाना सैय्यद अबुल हसन नदवी ने दिसम्बर सन् 1947 ई0 को मानवता का सन्देश का आन्दोलन शुरू किया था, इस आन्दोलन के सम्बोधक बिना भेदभाव के धर्म व मिल्लत के समस्त नागरिक थे, इसका विषय मानवता और आचरण था, इसका उद्देश्य देश के रहने वालों में जीवन की विधि और अच्छी नागरिकता का बोद्ध कराना था।

मौलाना ने एक सम्बोधन में कहा थाः

दुर्भावना, पूर्वाग्रह, साम्प्रदायिक और राजनैतिक उद्देश्य से बिल्कुल स्वतनत्र एवं असम्बंधित रखा गया है और जिसे अनदेखा करके हमारी यह पूरी सभ्यता और मानव समाज इस पर है वह गम्भीर ख़रते में है, जीवन और मृत्यु के संघर्ष में फंस गया है यह सत्य ईशदूतों (पैगम्बरों) ने अपने समय में कहा था और उन्होंने इसके लिए संघर्ष किया, ये सत्य अभी भी जीवित है लेकिन राजनैतिक आंदोलन, भौतिक संगठनों और राष्ट्रीय स्वार्थ ने धूल का ऐसा तुफान खडा कर दिया कि ये उज्जवल सच उनसे छिपे हुए है लेकिन मानव विवेक अभी मुर्दा और मानव मन अभी तक पंगु और अक्षम नहीं है, और यदि इन

तथ्यों को पूरी तरह से उदासीनता विश्वास और ईमानदारी से वार्णित किया जाये तो मानव स्वभिमान व मन अपने कार्य करने लगता है और बड़ी गर्मजोशी से इन वास्तविकताओं का प्रयोग करता है और कभी कभी तो ऐसा मालूम होता है कि इन भाषणों में इसके दिल की व्याख्या इसके दर्द का समाधान है।

इस संक्षिप्त और व्यापक लेख से आन्दोलन की महत्ता व उपयोगिता और इसकी मानवीयता पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है अर्थात इस आन्दोलन ने देश के वातावरण पर गहरा प्रभाव डाला, विशेष रूप से फसाद ग्रस्त क्षेत्रों में जहां एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के खून को प्यासा हो रहा था और घृणा और गिरोहबन्दी की आग लगी हुई थी, ऐसे क्षेत्रों में भी इसके सफलतापूवर्क सभायें हुई और कुछ स्थानों पर तो पूरा वातावरण ही बदल गया।

आन्दोलन की इस लाभ के दृष्टिकोण में मौलाना की शुरूआत से यही विचार रही और इस पर व्यवहार भी होता रहा कि इसके लिए कोई लगा बंधा व्यवस्था न जारी किया जाये, बल्कि जहां जैसी आवश्यकता पेश आये उसके अनुसार इससे काम लिया जाये, इसके लिए शुरू ही से जन सम्पर्क की मुहिम भी चलाई गयी, बड़ी बड़ी कान्फ्रेंन्स एवं गोष्ठियां भी की गयी, पत्रों के माध्यम से भी लोगों को आमन्त्रित किया गया, देश के विभिन्न भागों के दौरे भी किये गये, देश की महत्त्वपूर्ण शैक्षिक, सहित्यक कारों व राजनीतिक व्यक्तियों से भेट करके इनको भी ध्यान मिलाया गया और विशेष तौर पर इस विषय से

सम्बंधित बड़ा साहित्य तैयार किया गया जो लगभग सभी रचनाएं मौलाना ही के विषय और भाषण पर आधारित था, इसकी विभिन्न भाषाओं में बड़े पैमाने पर प्रकाशन किया गया, मौलाना के लेखों में साहित्यिक चाशनी के साथ साहित्यक सौन्दर्य, दर्दे दिल और खूने जिगर की जो सामाजस्य और सन्तुलन है इससे उनकी विद्धता का पता चलता है, इस साहित्य ने देश की सक्रिय विद्वानों और नेतृत्व को भी आकृषित किया और वह भी कुछ सोचने पर मजबूर हुए।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी0पी0 सिंह ने स्वयं मौलाना के सामने अपने बड़े आश्य का वर्णन किया और कहा कि ''जब मैं कोई बड़ी स्पीच देने जाता हूं तो आपकी कोई भाषण पढ़ लेता हूं, इससे मेरे अन्दर शक्ति पैदा हो जाती है'' अपने अनेक भाषणों में इन्होंने मौलाना की कुछ भाषणों के हवाले भी दिये।

अंत में मौलाना ने महसूस किया कि देश के पढ़े लिखे लोगों को और उन लोगों को जिन के हाथ में देश की बागड़ोर है और वह प्रभावशाली होते हैं, इनको विशेष रूप से आकृषित करने की आवश्यकता है, इसके लिए विभिन्न बड़े शहरों में आपसी मेलमिलाप और विचारों का आदान प्रदान के लिए बड़े बड़े कार्यक्रम किये गये, संवाद के शीर्षक से यह कार्यक्रम दिल्ली, पूना, नागपूर में किये गये और इसमें देश का सर्वश्रेष्ठ वर्ग (क्रीम टीम) सम्मिलित हुआ। मौलाना के इस काम और संदेश से वह लोग अपरिचित नहीं रहे थे, मगर इन सभाओं से इनके दिल व दिमाग पर प्रभाव पड़ा और कुछ सोचने

समझने और करने का इनमें भावना उत्पन्न हुई।

देश के चोटी के नेतृत्वकर्ता, प्रधानमंत्री, मंत्री और उच्च शासक गण से भेंट में भी मौलाना ने इनके सामने यह सच्चाई बयान किये और इनके सामने अपने भाषणों में दो टूक शैली में इनकी ज़िम्मेदारियां याद दिलाई और पत्राचार के माध्यम से भी इनको सचेत किया।

मौलाना अली मियां के काल में यह आन्दोलन मनमस्तिक का निर्माण और परिस्थिति का निर्माण तक ही सीमित थी, यह आन्दोलन की शुरूआत था और लोगों में इसकी अभिलाषा बड़ी तेज़ी से महसूस की जा रही थी देश के दूर दराज क्षेत्रों में इस आन्दोलन ने एक हलचल पैदा कर दी थी, लोगों के सोचने की विधि में परिवर्तन आया और बहुत से ऐसे हमदर्द सज्जन सामने आये जो देश की अशाति एंव नैतिक पतन पर चिन्तित थे लेकिन खुलकर कुछ कहने और कुछ करने का साहस नहीं रखते थे, इस आन्दोलन ने इनके दिलों को और इनके बाजूओं को मजबूत किया और फिर पूरे उत्साह के साथ वह मैदान में आये और खुलकर देश की व्यवहारिक व राजनैतिक और शिष्टाचार के गिरावट पर सुधारात्मक विवेचन और आलोचन किया।

आन्दोलन मानवता का सन्देश की आवश्यकता का अनुभव प्रत्येक विशेष व जनसाधारण को है लेकिन मनमस्तिष्क में आन्दोलन की लाभदायकता एवं महत्ता का स्पष्ट हो जाना ही काफी नहीं बल्कि बदलते हुए हालात और जमाने के मांगों के अनुसार सामर्थ्य और सम्भावनाओं की सीमा तक आन्दोलन को आगे बढ़ाने और इसकी सीमा को विस्तृत करने की अवश्यकता थी, अर्थात मौलाना अली मिया

के देहान्त के बाद मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी ने इस मानवता के कारवां को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी संभाली और इस काम में और अधिक व्यापकता एवं विस्तार पैदा किया, देश के विभिन्न प्रदेशों और शहरों के दौरे किये, परिस्थित का निरीक्षण किया, जगह जगह व्यक्ति तैयार किये और आन्दोलन का कार्यसीमा एवं कार्य विधि में कल्याणकारी कार्यों को भी शामिल किया।

मौलाना अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी ने कार्य की बागडोर को हाथ में लेते ही दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं की तरफ ध्यान दिया, एक कल्याणकारी कामों को मानवता का सन्देश के कार्यसीमा में शामिल किया और दूसरे उद्घोषणाओं में इन विषयों को भी स्थान दिया गया जो समाज का नासूर बनते जा रहे थे, इसके लिए इन्होंने सूफी सन्तों ऋषि मुनियों, आचार्यों और पादरियों को भी दावत दी, इन को इनके मठों से निकलने पर तैयार किया और ऐसा मंच तैयार किया जहां से इन ग़ैर मुस्लिम धार्मिक मार्गदशकों ने भी मानवता का सन्देश दिया। मौलाना ने इस मिशन में उन लोगों को विशेषकर शामिल किया जिन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं और मानवता के कल्याण और उन्नति की बातों का खुलकर समर्थन किया था इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी सफलता ''आचार्य स्वामी शंकर जी'' के द्वारा प्राप्ति हुई जिन्होंने पहले पवित्र क़ुरआन और इस्लाम के विरुद्ध ''इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास'' नाम से पुस्तक लिखी थी, लेकिन जब पवित्र क़ुरआन का अध्ययन संयम के साथ आत्मकेंद्रित होकर और दूर्भावना की ऐनक उतार कर किया तो वह इस्लाम के पक्षकार बन गये और इसके सुरक्षा

में ''इस्लाम आतंक या आदर्श'' के नाम से पुस्तक लिखी, स्वामी शंकराचार्य जी बराबर मौलाना के साथ रहे और अख़बार के एक साक्षात्कार में इन्होंने यह बात स्पष्ट की कि हमें मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हुस्नी की सरपरस्ती से सबसे अधिक लाभ पहुंचा। अक्सर ऐसा होता कि स्वामी शंकराचार्य जी और मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हुस्नी की बात ही पूरे सभा मानवता का संदेश की जान और आत्मा होती।

मौलाना अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी ने एक भाषण में का थाः

''मानवता के लिए निस्वार्थ प्रेम रखे, आज मानवता मर रही है, इंसान बहुत दुखी है, इसके लिए दर्दमन्दी पैदा कीजिए इसके अन्तर्गत सम्मान की भावना रखें, अपने धर्म पर मजबूती के साथ क़ायम रहें, मगर याद रखें कि किसी का अपमान न हो अत्याचार मत कीजिये, ज़ालिम मत बने, ऊपर वाला जुल्म को बिल्कुल पसन्द नहीं करता है जमीन में हत्या, अत्याचार करना, फसाद बरपा करना किसी तरह भी उचित नहीं। धर्म अच्छाई का मार्ग दिखाता है, अच्छाई और नेकी के रास्ते को अपनाये देश और वातावरण स्वयं ही सुधरेगा। मानवता की रक्षा के लिए और विकास के लिए एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहें, एक दूसरे का सम्मान कीजिये, कुछ लोगों का विचार है कि धर्म के कारण झगड़े होते हैं बिल्कुल नहीं। धर्म तो

अच्छाई की तरफ मार्गदर्शन करते हैं, अगर हिन्दु एक दूसरे की इबादतगाहों को तोड़ते हैं और मुसलमान आपस में मतभेद रखते हैं तो यह धर्म नहीं सिखता, इन बुरे कर्मों के कारण से धर्म को बुरा नहीं कहा जा सकता''।

मौलाना अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी की चिन्तनशीलता एवं कार्यशैली के तथा प्रयत्न के परिणाम में मानवता का सन्देश का काम देश के बाहर भी शुरू हुआ, अर्थात मौलाना ने जब दक्षिण अफ्रीक़ा का और फिर सऊदी अरब का यात्रा किया तो वहां पर इसकी महत्ता व आवश्यकता के साथ इसका परिचय कराया और व्यवहारिक दशाओं को व्यवस्थित की जिनके अनुसार बाद में काम शुरू हुआ इसी तरह बंगला देश में भी आपके साथी और प्रशिक्षित लोगों के द्वारा इसकी नीव पड़ी, बड़ी संख्या में मानवता के सन्देश के साहित्य इन देशों में पहूंचे और लोगों की तरफ से सकारात्मक प्रतिक्रिया का वर्णन किया।

मौलाना अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी के देहान्त के बाद मौलाना बिलाल अब्दुल हई हुस्नी नदवी ने इस महान ज़िम्मेदारी को संभाला अपनी अन्य इल्मी व दावती व्यस्ता पर इस ज़िम्मेदारी को प्रधानता दी और अपने लेखों का विशेष विषय मानवता का सन्देश को ही बनाया। इन्होंने मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी की सोच और मौलाना अब्दुल्लाह हुस्नी नदवी के योजना के अनुसार इन कारवां को आगे बढ़ाना शुरू किया, देश के छोटे बड़े पचासों क्षेत्रों के दौरे किये, जगह जगह व्यक्ति निर्माण का काम किया मानवीय सेवा के लिए इनको

एकजूट किया, आज मौलाना के साथ एक टीम कार्यरत है, जिसमें ऐसे नवजवान भी शामिल हैं जो दीनी इल्मी व सोच के साथ आधुनिक ज्ञान और हिन्दी व अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी विशेषता रखते हैं।

मौलाना बिलाल हुस्नी नदवी की अंथक मेहनत, प्रतिदिन के प्रयत्न और मानवता के लिए चिन्तन के परिणाम में आज देश के एक विशाल क्षेत्र तक मानवता की आवाज़ पहुंच चुकी है, शायद ही कोई बड़ा शहर या मशहूर क्षेत्र ऐसा हो जहां मानवता के हलचल को न महसूस कि जाती हो।

आन्दोलन मानवता का संदेश की प्रसिद्धि, काम की व्यापकता और लोगों के झुकाव को देखते हुए मौलाना ने व्यवस्था के तौर पर विभिन्न उपाय भी किये, सबसे पहले काम को शुरू से अन्त तक पूरा किया, इसकी कार्य शैली, कार्य सीमा निश्चित किया, इसके अलावा देश के प्रदेशों को विभिन्न खंड़ों में और बड़े शहरों, ज़िलों और कस्बों में विभाजित किया, इनके संरक्षक और ज़िम्मेदार नियुक्ति किये और फिर कार्यक्रमों को केंद्रिय कार्ययालय से जोड़ दिया, अब पूरे देश में मानवता का संदेश के शीर्षक से जो भी कार्यक्रम होते हैं आमतौर पर सीधे मौलाना के परामर्श और इनकी देखरेख में होती है, यहां तक की महत्त्वपूर्ण अवसरों पर जो कार्यक्रम किये जाते हैं वह हर जगह लगभग एकसा होती है, इस तरह पूरे देश में एक ही सन्देश पूरी शक्ति के साथ पहुंचता है।

इस व्यवस्था की एक विशेषता यह भी है कि काम की

आवश्यकता एवं मांगों और कार्यविधि का लगातार निरीक्षण लिया जाता है, प्रत्येक माह क्षेत्रवार बैठके प्रति तीन माह पर जोनल की सभा और प्रतिवर्ष में एक बार सम्पूर्ण देश का जनसभा सम्पन्न किया जाता है, इन सभाओं और संगोष्ठियों में समस्त प्रतिनिधि और कार्यकर्ता सम्मिलित होते हैं, कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं, अनुभव बयान किये जाते हैं छोटी–छोटी चुनौतियों पर संवाद होता है, परामर्श होते हैं और फिर अगले वर्ष के लिए कार्यविधि और योजनाएं तैयार की जाती हैं।

यह आन्दोलन इस तौर पर भी श्रेष्ठ है कि इसके लिए न कोई चन्दा होता है, न कोई फंडिंग होती है और न किसी तरह का सरकारी सहयोग लिया जाता है, कार्यकर्त्ता अपनी स्थिति के अनुसार अपना माल ख़र्च करते हैं और अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करते हैं यही कारण है कि इसमें आय धन संग्रह का कोई विभाग नहीं है।

इस आन्दोलन के कार्यक्रम को समझने के लिए निम्नलिखित शीर्षक पर कार्य किया गया।

(1) साहित्य वितरण (2) नुक्कड सभा

(3) संवाद (4) जन सभा

(5) स्कूलों में कार्यक्रम

(6) लेख प्रतियोगिता

(7) भाषण प्रतियोगिता

(8) कैरियर निर्देशन

(9) अस्पतालों में मुलाकात

(10) मेडिकल कैम्प

(11) वृद्धा आयु होम की स्थापना

(12) ग़रीबों एवं असहाय की सहायता

(13) पिछडे क्षेत्रों की देखभाल

(14) लावारिश बच्चों की देखभाल

(15) जेलों में कार्यक्रम

मानवता के सन्देश की उपयोगिता लाभदायकता व आवश्यकता और इसकी व्यापक प्रभाव का अनुभव अब सबको है। माननीय मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी ने जिन हालात में यह काम शुरू किया था उस समय बहुत से दिमागों के लिए इसको स्वीकार करना कठिन हो रहा था, मगर आज इसके सामूहिक प्रभाव को न सिर्फ स्वीकार किया जा रहा है बल्कि विभिन्न आन्दोलनों व संगठन इसके कार्यविधि को अपना रही है और इसे आदर्श भूमिका की दशा से देख रही है जिससे की एक आदर्श समाज का निर्माण हो सके और लोगों का भविष्य उज्जवल हो सके और एक ज़िम्मेदार नागरिक बनकर राष्ट्र को प्रगति एवं विकास के पथ पर आगे बढ़ा सके।

☆☆☆

मानवता के संदेश की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि दोनों समुदायों के बीच यदि आपसी संवेदनशीलता, आपसी सम्मान, आपसी सौहार्द और आपसी हितों को ध्यान में रखकर काम किया जाये तो न केवल इन दोनों समुदायों का भला होगा बल्कि एकता एवं समानता से विश्व समुदाय भी इससे लाभान्वित होगी, दोनों समुदायों

के बीच भड़काऊ भाषण, घृणा, उत्तेजना एवं तनाव को ख़त्म करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में शान्ति व्यवस्था बनी रहे समस्त समुदाय हिन्दु, मुस्लिम, सिख ईसाई सब लोग पड़ोसी है मानवीय रिश्ते से भाई–भाई है, भाईयों एवं पड़ोसियों के बीच मतभेद और विचारों में अनबन होना कोई अद्भूत बात नहीं है यह स्वाभाविक प्रक्रिया है, अपने अहंकारों, रवयों, मतभेदों और तनाव को आपसी संवाद से मिल बैठकर दूर करना चाहिए, एक दूसरे का सम्मान करे और धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप न करे, ईद मिलन, होली मिलन का आयोजन करे आपसी सौहार्द का वातावरण क़ायम रखे तो दोनों समुदायों के संम्बन्ध मधुर एवं सहज हो सकते हैं। एक दूसरे का प्रतिद्वन्दी या शत्रु मानकर कुछ असमाजिक तत्त्व, धूर्त, लालची लोग आर्थिक एवं राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश करते हैं समाज में ऐसे लोगों से सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए।

मानवता का संदेश के मंच द्वारा दोनों समुदायों के ज़िम्मेदार और जनसामान्य लोग भी जरा गंभीरता पूर्वक विचार करे तो इस इक्कीसवीं सदी में भारत की तक़दीर बदल सकती है। और हिन्दुस्तान मानवता का विश्व गुरू बन सकता है।

☆☆☆